TC/RAJ/RAJ/00095

अपरंच

राजस्थानी भासा अर साहित्य री तिमाही

अक्टूबर-दिंसबर 2016

सलाहकार मंडल

मोहन आलोक, गंगानगर

नंद भारद्वाज, जयपुर

डॉ. आईदान सिंह भाटी, जोधपुर

डॉ. नीरज दइया, बीकानेर

संस्थापक संपादक

स्व. पारस अरोड़ा

संपादक

गौतम अरोड़ा

पारस अरोड़ा विसेसांक

संपादन सैयोग

शंकरसिंह राजपुरोहित, बीकानेर

डॉ. मदन गोपाल लढ़ा, महाजन

प्रह्लाद राय पारीक, पीलीबंगा

गौरीशंकर कुलचंद्र, हनुमानगढ़

ओम नागर, कोटा

मुखौळ : **रमेश व्यास** जोधपुर

टाइप सैटिंग : **भंडारी ऑफसेट** जोधपुर

अंतरजाळ अंक संचालक : **डॉ. नीरज दइया** बीकानेर

साज सज्जा : **रमेश व्यास** जोधपुर

सगळा पद अवैतनिक

सदस्यता

अेक अंक रौ मोल : 30 रिपिया

अेक बरस रौ मोल : 100 रिपिया

तीन बरस रौ मोल : 250 रिपिया

आजीवन : 1100 रिपिया

प्रकासक

अपरंच प्रकासण

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)

दूरभास : 0291-2720796, 7877982810, 9413961800

e-mail : apranchrajasthani@gmail.com

web : www.apranch.wordpress.com

विगत

❑संपादक री बात

औ अंक पारस जी नै समरपित	*गौतम अरोड़ा*	3

❑आलेख

बदळाव री हूंस जगावती पारस जी री कविता	*नंद भारद्वाज*	5
उपन्यास री गांठड़ी अर खुलती-घुळती गांठां	*डॉ. नीरज दइया*	12
पारस अरोड़ा री छेहती कविता : अेक ओळखाण	*श्याम जांगिड़*	16

❑काव्य-जात्रा

'झळ' कविता-संग्रै सूं		18
'जुड़ाव' कविता-संग्रै सूं		24
'काळजै में कलम लागी आग री' कविता-संग्रै सूं		36

❑आलेख

झळझळाट करती अगन सरीखी है पारस अरोड़ा री कविता	*दुलाराम सहारण*	43

❑ओळूं

जनवादी कविता रा थंब हा पारस जी	*आईदान सिंह भाटी*	47
पारस अरोड़ा री याद में	*गोरधन सिंह शेखावत*	52
पारस अरोड़ा : मायड़ भासा रौ अेक बटाऊ	*हरमन चौहान*	54
बस अेक हौ पारस जिसौ पारस, बाकी बेसी खीला है....	*डॉ. नीरज दइया*	57
पारस जी तौ पारस हा	प्रो. भंवरसिंह सामौर	62

❑संस्मरण

विचार-वैविध्य नै स्वीकारण री खिमता ही पारस जी में	*जानकीनारायण श्रीमाली*	63

❑चितार

यादां रै ओळावै पारस जी	*रामसिंह राठौड़ डांवरा*	64

❑संपादन

'अंवेर' रै सम्पादकीय सूं	*पारस अरोड़ा*	66

❑बेतारीख डायरी रा पाना

मैणती लोगां बिच्चै म्हैं / राजस्थानी रै बारै में	*पारस अरोड़ा*	69

❑पोथी-अंस

किसको कहे कोई अपना यहाँ	*रमेश उपाध्याय*	72

औ अंक पारस जी नै समरपित

''पारस भाई, अपरंच निकाळण में आवण वाळी मुसीबतां नै समझूं हूं। आप नाराजगी री बात करी तौ म्हारा काका, थांरै सूं कैड़ी नाराजगी? आप सूं नाराज व्हियां तौ राजी किण सूं रैवांला? म्हे कोसिस करस्यां कुछैक ग्राहक बणास्यां। निरासा भरी बातां मत करौ, म्हैं नचींतौ व्हैग्यौ, 'अपरंच' जरूर छपैला।''

सन् 1981 मांय आईदान सिंह भाटी री जैसलमेर सूं पारस जी नै लिख्योड़ी अै ओळ्यां राजस्थानी पत्रिकावां री आफळ अर वांरै सम्पादकां री मनगत अर पीड़ नै चवड़ी करै। अजै हालात वै रा वै है। पारस जी 1980 मांय जद अपरंच काढणी सरू करी तद वै अेक मिशन रै रूप में इणरी सरुआत करी। ग्राहकां रै टोटै रै चालतां मित्रां अर प्रेसां रौ उधार करता थकां भी नौ अंकां पछै 'अपरंच' बंद हुयगी, पण आ पीड़ पारस जी रै मन मांय ही।

जद म्हैं बारह बरसां रौ हो तद 1989 मांय वै सोळा पेज री 'अपरंच' (दसवैं अंक रै रूप में) भळै सरू करनै अेक अंक काढ्यौ। औ राजस्थानी पत्रिकावां मांय अेक नवौ प्रयोग अर प्रकासण रै खरच नै कम कर पत्रिका नै जींवती राखण री वांरी आफळ ही। म्हनै अजै याद है, वौ अंक वै खुद री कमतरी तनख्वाह सूं घणौ दौरौ, पण अेक हूंस सागै काढ्यौ।

औ अंक मिळ्यां पछै श्री चेतन स्वामी आपरै कागद मांय लिख्यौ, ''अपरंच पाछी छापणी सरू करनै तौ आप घणौ सांतरौ काम कर्‌यौ है, 'राजस्थली' होवौ कै भलांई 'अपरंच', राजस्थानी री आं पत्रिकावां री आ आथड़ कद बंद होवैला? बार-बार बंद होवण री नियती सूं कद मुगत होवैला? ठीक है कै इण छापामार पद्धति सूं आपां आंती नीं आवां, पण जुद्ध जिण खातर लड़रैया हां, वै घोर कद तक खांचैला? कैड़ी दारसनिकता है—जीवणौ है बींनै सीवणौ है।''

श्री रतन शाह कलकत्ता सूं लिख्यौ, ''अपरंच का नया अंक प्राप्त हुआ। 'अपरंच' अपने ढंग का एक अलग रिसाला है। प्रकाशन का कार्य महंगा हो गया है, इसलिए आप पत्रिका को इसी रूप में सोलह पेजीय कलेवर के साथ छापते रहें, परन्तु हो सके तो निरन्तरता बनाए रखें।''

वां दिनां नन्द भारद्वाज बीकानेर हा। वां लिख्यौ, ''बरसां बाद 'अपरंच' रौ नवौ अंक मिळ्यौ। पैली निजर में देखनै जी-सौरौ होयग्यौ, पण मन रंजियौ नीं। कारण अर हालत दोई म्हैं जांणूं, इण वास्तै ओळमौ तौ किणनै देवूं। आप ओजूं उम्मीद छोडी नीं है अर आपरी निस्ठा अर जतन रौ म्हैं आदर करूं। मौजूदा अंक री सामग्री कमती बेसक लागै, पण क्वालिटी रै लेखै कमजोर नीं। अरसै बाद राजस्थानी री नवी कवितावां इणी अंक रै मारफत पढण नै मिळी। अै सगळी ओळ्यां राजस्थानी पत्रिका रै जतन अर जरूरत दोनूं नै चवड़ी करै। अपरंच रौ अंक पारसजी अर राजस्थानी री तमाम पत्रिकावां री इणी आफळ नै समरपित।

पारस जी माथै विशेषांक काढण मांय सब सूं बडी अबखाई म्हारौ वांरौ बेटौ होणौ है। कदास जे संपादक कम, बेटौ ज्यादा व्हैग्यौ होवूं तौ माफी री अरज है। औ अंक पारस जी नै

समरपित है अर बेटै रूप वांरै निजू जीवण माथै कीं बात राखणी जरूरी समझूं। पारस जी रौ जलम 6 अगस्त, 1937 नै वांरै नानाणै अजमेर मांय हुयौ। वै पीपाड़ निवासी हनुमान जी अरोड़ा मुम्बई मांय हलवाई री दुकान अर अेक भोजनालय चलावता। जद पारस जी 13 बरस रा हा, तद वांरै पिताजी नै कैंसर व्हैग्यौ अर दो साल टाटा मैमोरियल अस्पताळ मांय भरती व्हैता थकां भी पार नीं पड़ी। आं दो बरसां मांय पारस जी बम्बई मांय फुटपाथ माथै फ्रूट ई बेच्या अर वांरा मा'सा ई रोटी-ईलाज सारू खासा खपिया। भईसा रै सुरगवास पछै पारस जी री पढाई छूटगी अर वै जोधपुर आयग्या। 15 सूं 21 बरस री उमर तांई वै रोजी-रोटी सारू मजूरी करी। जूण री इणी आफळ मांय वै लिखणौ-पढणौ सरू करयौ अर सोसण रै खिलाफ आपरी अभिव्यक्ति कविता रै मारफत सरू व्ही। इण पछै पारस जी साधना प्रेस मांय कंपोजिटर रौ काम सीख्या। 1958 मांय इक्कीस बरसां री उमर में वांरौ ब्यांव श्रीमती मोहन कुमारी सागै व्हियौ। पछै तेरह बरसां तांई वै साधना प्रेस, लॉ वीकली, रूपायन संस्थान बोरूंदा समेत जोधपुर, अजमेर अर दिल्ली री केई प्रेसां मांय नौकरी करी। माड़ा बगत मांय सोजती गेट जोधपुर रै अेक जूतां रै शो-रूम मांय ई मजूदरी करणी पड़ी तौ कदैई रेल रा चीला बणावण री। पण पढण-लिखण रै सौक अर साधना प्रेस रै हरिजी री प्रेरणा सूं वै पाछी पढाई सरू कर मैट्रिक पास करी। 1969 मांय वांरी नौकरी जोधपुर वि. वि. प्रेस मांय कंपोजिटर रै रूप में लागी अर बठै सूं इज वै 1977 मांय सेवानिवृत्त हुया।

वांरा तीन काव्य-संग्रै— 'झळ' (1974), 'जुड़ाव' (1984), 'काळजै सूं कलम लागी आग री' (1994) प्रकासित हुया। वांरौ उपन्यास 'खुलती गांठां' भी खासौ चावौ व्हियौ। पारस जी 'जांणकारी' अर 'अपरंच' रा संपादक हा। 'दीठ' अर 'माणक' रै संपादन सूं भी जुड़्योड़ा रैया। वै राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी रै कविता छापै 'अंवेर' रा भी संपादक रैया। वांरा दो अनुवाद मंगलेश डबराल री हिन्दी गद्य कविता 'हम जो देखते हैं' अर राजेश जोशी री लांबी कविता 'समरगाथा' छप चुक्या है। वां स्टीफन ज्विग रै उपन्यास 'विराट' अर विश्व रा चाळीस सूं बेसी कवियां री कवितावां रौ राजस्थानी मांय अनुवाद करयौ जकौ 'माणक' अर 'अपरंच' मांय लगोलग छप्या। वै माणक रै 'कवितांक-अेक' रौ संपादन भी करयौ। अजै वांरी डायरी, अेक कविता-संग्रै अर अेक उपन्यास अणछप्या है। पारस जी मार्क्सवादी विचारधारा सूं प्रभावित हा। वै प्रेस मजूरां रै संगठण अर जनवादी लेखक संघ रै संस्थापक सदस्यां मांय सूं अेक हा। वै जलेस रा राज्य कोषाध्यक्ष अर राष्ट्रीय कार्यकारिणी रा सदस्य रैया। वै राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रा उपाध्यक्ष भी रैया।

बात री सरुआत कीं कागदां सूं करी अर खतम भी अेक कागद सूं करणी चावूं। 1981मांय वांरा मित्र ओंकार श्री वांनै लिख्यौ, ''पारस भाई, राजस्थानी सूरज री इण लाल किरण नै बुझण नीं देणी है, जिकी मदद व्है वा करां।''

औ अंक पारस जी नै, राजस्थानी पत्रिकावां री खेचळ अर सुधी पाठकां री हूंस नै समरपित। आ लाल किरण जगमगती जोत दांई लगोलग आगै बधती रैवैला अर आप सब रौ सैयोग 'अपरंच' नै मिळतौ रैवैला, अैड़ौ म्हनै विस्वास है।

-गौतम अरोड़ा

● *आलेख*

नंद भारद्वाज

बदळाव री हूंस जगावती पारस जी री कविता

कविता रै रचाव अर उणरै विगसाव री आपरी न्यारी प्रक्रिया अर अेक अदीठ आफळ व्है, जिकी किणी अणचींतै दबाव सूं उगणीस-इक्कीस भलां व्है जावै, उणरै आंगै आवतै बदळाव या आपै ढळती ऊरजा में घणौ अंतोळौ नीं आवै। बगत अर हालात समचै जिकौ बदळाव सुभाविक व्है, वौ तौ आयां ई सरै। वौ आपरी जरूत परवांण आवै अर जद तांई सांवठी समूह-चेतणा अर वांरै कारज-सुभाव रौ अंग नीं बण जावै, उणनै अंगेजण री ऊरमा पण भाळै नीं पड़ै। इण आफळ अर ऊरमा री सरुवात लेखै सातवैं दईकै में राजस्थानी री नवी कविता नै अेक ठावी ओळख दिरावण में जिका कवियां री महताऊ भूमिका रही, कवि पारस अरोड़ा रौ नांव वां में उल्लेखजोग गिणीजै। सन् 1970-71 में साथी कवि तेजसिंह जोधा उण बगत रा कीं टाळवां कवियां री कवितावां नै अेकठ रूप में छपावण री जिकी योजना बणाई, वा आगै भलांई नीं बधी, पण उण सूं राजस्थानी री नवी कविता आपरी ठावी जिग्यां अवस बणाय लीवी। खुद तेजसिंह जोधा वां दिनां राजस्थानी री अेक लांबी कविता 'कठैई कीं व्हैगौ है' लिखण में लाग्योड़ा हा। आ कविता केई किस्तांथ में लिखीजी अर करीबी लोगां रै बिच्चै वां जठै ई साहित्यु संगोष्ठियां में इण कविता नै सुणाई, वांनै आछौ रिस्पोंस मिळियौ। निस्चै ई उणसूं वांरौ आतम-विस्वास प्रबळ हुयौ अर इणी समचै नवै भावबोध अर आपरै निरवाळै सिल्प रै पांण वांनै राजस्थानी रा जिण पांच कवियां री कवितावां इण योजना रै अनुकूल लागी—वै कवि हा, गोरधनसिंह शेखावत, पारस अरोड़ा, ओंकार पारीक, मणि मधुकर अर खुद कवि-संपादक तेजसिंह जोधा अर इण सीरीज री पैली कड़ी 'राजस्थाानी-अेक' छापै सरूप सांम्ही आई।

'राजस्थाानी-अेक' रै प्रकासण अर उण माथै सरू व्ही चरचा सूं उम्मीद तौ सगळा नै आई ही कै इणसूं जुड़ण वाळा कवि खुद आपरै गाढै सिरजण सूं राजस्थानी कविता री नवी साख बणावैला अर उणनै किणी ठावै मुकांम तांई पुगावैला, पण उम्मीद फगत उडीक बण नै रैयगी। हिन्दी री नवी कविता रा वाजिन्दा कवि मणि मधुकर 'राजस्थानी-अेक' में छपी कीं कवितावां साथै आपरी हिन्दी कवितावां रौ राजस्थानी उल्थौ त्यार कर रातूं-रात अेक संग्रह छपवायौ—'पगफेरौ' अर उण माथै साहित्य अकादमी रौ पुरस्कार हासल करियां उपरांत आगै वांनै राजस्थानी

में कविता लिखण री जरूत कम ई लखाई। ओंकार पारीक 'राजस्थानी-अेक' री नैनी-नैनी कवितावां पछै जिण भांत मून धारण कियौ, पाछा राजस्थानी कविता रै ताल में कमती ई निजर आया। खुद अंक रा संपादक तेजसिंह जोधा ई आपरी तीजी कविता 'दीठाव रै बेजां मांय' रै प्रकासण पछै काव्य-सिरजणा सूं इण भांत उदासीन हुया कै वां पाछल ई नीं फोरी। बाकी बच्या पारस अरोड़ा अर गोरधनसिंह शेखावत, अर अै दोनूं कवि आपरै ढंग सूं कमोबेस सक्रिय रैया।

'राजस्थानी-अेक' रा आं पांच कवियां में पारस अरोड़ा निस्चै ई अेक संजीदा कवि रै रूप में आपरी साख नै जरूर बणायां राखी अर वांरी कवितावां रा संग्रै ई अगोलग सांम्ही आवता रैया। वां खुद आपरै बूतै 'अपरंच' सरीखी तिमाही पत्रिका रै जरियै राजस्थानी नवी कविता नै अेक ठोस आधारभोम अर नवा कवियां नै ओपतौ मंच दियौ। खुद छापैखानै में काम करतां वां आपरी मैणत-मजूरी अर राजस्थानी रा लेखकां-पाठकां री हूंस समचै दो बरस तांई लगोलग इणी 'अपरंच' पत्रिका रा आठ अंक निकाळिया, जिकी आज तीन दईकां पछै पाछी नवै सरूप में अेक साहित्यिक पत्रिका री भूमिका सांभ राखी है। असल में वांरी मूळ चिन्ता फगत आपरी मातृभासा में कविता लिखण तांई सीमित नीं ही, नीं कोई आ मनोकामना कै वै आपरी भासा रा आगीवांण कवि मानीजै। असल में कविता वां सारू समाजू सरोकारां सूं जुड़णै अर अेक जनवादी लोकचेतणा री अलख में आपरौ सुर मिळायां राखण री मांयली बळत रौ नतीजौ ही, जिकी कदेई 'झळ', कदेई 'जुड़ाव', तौ कदेई काळजै सूं 'काळजै में कलम लागी आग री' सरीखी पोथियां री मारफत अगोलग सांम्ही आवती रही।

इणी समचै जद राजस्थाीनी कविता में आवतै नवै बदळाव री पड़ताल करां तौ आ बात साफ निगै आवै कै सातवैं दसक तांई आवतां मुलक रा सामाजिक-आरथिक हालात खासा बदळग्या हा। गांवां में पंचायतीराज कायम व्हेग्यौ। लोकतंत्र नै लेय कीं मौळी-माठी जाग्रती ई आई। आम जनता में राज बाबत वापरियोड़ी उदासीनता कीं कमती व्ही। सड़क अर रेल यातायात में बधोतरी व्ही। कस्बां में बिजळी पूगी, अखबार, रेडियो अर संचार-प्रसार रा साधन पूग्या। मुलक अर दुनिया सूं लोगां री पिछांण बधी, गांव-गळी, आड़ोस-पाड़ोस अर मुलक री मोटी अबखायां नै लेय लोग सवाल उठावण लाग्या। गिणती री सुविधावां रै साथै सार्वजनिक जीवण में अबखायां बधी—आम जरूत री चीजां मूंघी व्हेती रही, बेरोजगारी दिन-दूणी बधी, भ्रस्टाचार अर बेईमानी समाज री नींवां तांई जाय पूगी। इणी समचै वोट री राजनीत करणवाळां अणफैम में ई केई बातां लोगां नै समझाय दीवी, जिणरौ कुल नतीजौ औ हुयौ कै मुलक रा माली हालात नै लेय लोगां री बधती चिंतावां अेक हद पूग्यां पछै असंतोख में तब्दील व्हेण लागी। इणी असंतोख रै कारण भणिया-गुणिया अर हालात सूं पीड़ित लोगां में रोस भरीज्यौ—औ असंतोख अर रोस ई जीवण रा तमाम दूजा छेत्रां में आपरै ढंग सूं सांम्ही आवण लाग्यौ। आं ई लोगां में कीं संवेदणसील कवि हा, जिकां रै सिरजण में हालात अर अबखायां मुखर व्ही। साहित्य रा पाठकां री मनगत ई बदळण लागी अर वां मांय सूं जिका नवा रचनाकार सांम्ही आया वांरी संवेदणा में औ गाढौ असंतोख अेक तीखी प्रतिक्रिया रै रूप में परगट हुयौ—पारस अरोड़ा उणी दौर रा आगीवांण कवि जाणीजै।

पारस अरोड़ा रै काव्य-लेखण री सरुआत यूं तौ सन् 1965 सूं व्ही अर 'राजस्थाानी-अेक' सूं पैली वांरी कवितावां 'जांणकारी', 'ओळमों', 'लाडेसर', 'हरावळ', 'मरुवाणी' इत्याद पत्रिकावां री मारफत सांम्ही आय चुकी ही, पण पोथी रूप में वांरौ पैलौ संग्रै 'झळ' सन् 1974 में सांम्ही आयौ। इण संग्रै री भूमिका में उण बगत रा हालात सूं जुड़ियोड़ा सवालां रौ हवालौ देवतां वां आ बात खुलासा लिखी—''प्रेस री नौकरी अर साहित्य री रुचि रै कारण राजस्थानी साहित्य अर साहित्यकारां सूं जिकी सैंध-पिछाण कायम व्ही, वठै सूं सवालां रौ अेक सिलसिलौ सरू हुयौ—दूजी भासावां में व्हेंतौ बदळाव अर विगसाव राजस्थानी री दीठ सूं बारै क्यूं रैयग्यौ ? क्यूं आयगी थिरता अर साहित्य बगत री वसूली रौ साधन बण'र रैयग्यौ ?.... हवा में पग धर भाजतै बीसवैं सईकै रै साथै घेरदार घाघरौ अर गज भर रौ घूंघटौ लियां कठाक तांई दौड़ैला आ राजस्थानी ? कठा तांई अेक भासा आदमी रै मौजूदा दरद नै भुलावौ देवती रैवैला ?'' अै तमाम सवाल कवि रै सांम्ही हा, उणनै लागतौ कै आपरी उण सुर-संवेदणा में वौ अेकलौ है। उणी अेकलपै री पीड़ नै याद करतां वां आगै लिख्यौ, ''दुरगुण रूप जित्ता वाद व्हे सकै, वै सगळा मौजूद अर वांरी मौजूदगी म्हारी मौजूदगी नै नकारती रैयी। कांई म्हारा सबद भीड़ रै बेअरथ हाकै में डूबता रैया ? पण नीं, कठैई पूगता रैया। अर सेवट म्हारौ अेकांत टूट्यौ। अेक युवा कवि री मैणत राजस्थानी री नवी कविता रा पांच बिखरियोड़ा सुरां नै भेळा कर उत्तम सुर दियौ कै आ रही राजस्थानी री नवी कविता—तूटतौ अेकांत अर आवतौ बदळाव।'' इण बदळाव अर उम्मीद रै साथै पारस अरोड़ा रै काव्य-लेखण में जिकौ नवौ बदळाव आयौ, उणी री लूंठी साख भरै 'झळ' री वै कवितावां, जिकी इण भासा में नवी कविता रै सरूप सांम्ही आई अर उणी काव्य-सुर में आतम-बयान सरूप आपरी बात वां कविता में ई कही :

म्हारै सूं जलमी है केई कवितावां / थैं म्हारै सूं इणां नै नीं, इणां सूं म्हनै ओळखोला / म्हा रा दीठ-अदीठ रूप नै / इणां में ठौड़-ठौड़ खोजोला।

'झळ' री कवितावां रै सिरजण-संसार में दाखिल हुयां पतौ लागै कै कवि रौ अणभव अर मिनखाजूण नै लेय उणरी चिंतावां कित्ती गैरी अर पसराव लियोड़ी है—देस-काळ री सींवां पार वै किण भावी री आस राखै। वांरी निजर में औ जीवण अथाग समदर में आपरै भुजबळ रै पांण तिर नै पार पूगणै रै समान है अर वै चावै कै वांरै साथै तिरणिया लोग किणी दूजै आसरै री उम्मीद में ओछा समझौता नीं करै, आपरै आतमबळ माथै भरोसौ राखै— वां जूंझारू लोगां रौ धीजौ बंधावतां कवी कैवै :

समदर री छौळां / तोड़ सकै देह-बळ आपणौ / पण आतम-बळ तोड़ण री सगती / आखै समदर में ई कोनी।

कवि नै इण जीवण-जूझ में 'मारीजग्या' आ कैवावणौ कबूल है, 'मरग्या' कैवावणौ कबूल कोनी। मौजूदा जीवण-यथार्थ री हकीकत नै देखतां कवि रै मन में इण बात रौ गैरौ अणेसौ लखावै कै जिण मिनखादेही जीवण-जातरा में पगो-पग जमीं-कंप झेल्या अर च्यारूंमेर बधापौ देख्यौ, हरेक विगसाव अर बधापै में उणरी लूंठी भागीदारी रही, उणी मिनखा देही री इत्ती बेकदरी कै आज वा पड़ी है किणी अस्पताळ में 'भटक्योड़ी, थाक्योड़ी, जगै-जगै पाटा बांध्योड़ी'

अकारथ अर अरथ-बिहूणी। अर इण हालत में उणी रै हाथां हुयौ औ 'विगसाव' अर 'बधापौ' उणरै ई वास्तै अभिसाप बणग्यौ। वौ जद आजादी पाछला बरसां में मुलक रा (खासकर आपरै चौफेर मरुस्थळी जीवण रा) हालात रौ जायजौ लेवै तौ उणनै इण बात री गैरी निरासा व्है कै 'कृषि प्रधान देस' बरसां सूं पड़तै थळियै काळ री गत हाल ज्यूं-रो-त्यूं कायम है। आजादी पछै कायम लोकराज रै नांवै जिका सपना अर संकळप लिरीज्या, वै तौ जाणै, कठै ई अलोप व्हेग्या :

मजूर रगत बेच करै मजूरी / खाडौ खाली रौ खाली / राता दाग / चिलक रूपाळी भरती जाय तिजोरी / धुकधुकियो हड़ताल करै नीं रुकै बगत री फेरी। जन, गण अर मन री आवाज सूं / ओळखीजै गणतंत्र अर स्वाधीनता दिवस / सहीदां रा टोळा क्यूं होम्या प्राण औ वै भूलगा।

पण आं हालात रौ साखी व्हेयण रै साथै ई कवी उण बदळाव री विगसती चेतणा सूं ई अणजांण कोनी हौ, जिकी अेक इतिहासू जरूत रै लेखै आं ई बरसां में मांवौ-मांय सचेतण व्हौती रही है - वांरी 'इतिहास-पख' कविता उणी जाग्रत चेतणा री साख भरै :

आपरौ आकास / आपरी दिसावां धारतौ / पगां हेठली जमीं माथै / खुद रै अधिकार री घोसणा करतौ / थोपीज्योड़ा अेकोअेक आरोपां री नींव खोदतौ / खुद रौ अेक 'सूर्य-मंडळ' उंचायां / वौ केयां रा 'प्रभा-मंडळ' तोड़तौ / आयगौ है जवानां रौ जूथ— औ इतिहास-पख।

'झळ' री छेकड़ली कवितावां तांई पूगतां पारस अरोड़ा रौ काव्य-सुर खासा बदळग्यौ हौ। सन् 1974-75 पछै वांरी जिकी कवितावां पत्रिकावां रै मारफत सांम्ही आई, वां में समाजू सरोकारां अर समाजवादी चेतणा बाबत कवि रौ गाढौ लगाव अर विस्वास औरूं पुख्ता हुयौ। वांरै दूजै काव्य-संग्रै री लांबी सिरैनांव कविता 'जुड़ाव' राजस्थानी काव्य-जातरा में इण लेखै न्यारी मिसाल जाणीजै, जिणमें कवि अेक जूझारू काव्य-नायक री जीवण-जूझ अर उणरै समाजू-संघर्स बिच्चै उण अणतूट रिस्तै री सांवठी पिछाण कायम करतौ दीखै। आ कविता आपरी सरुआत सूं ई राजस्थानी समाज अर उणरी पारंपरिक धारणावां नै अेक चुणौती-सी देवै—

सगळी आंगळियां अेक सरीखी नीं व्है— इत्तौ कैवण सूं पूरी नीं व्है बात / जठै तांई नीं कैवां कै सगळी आंगळियां अंगूठै समेत हथेळी सूं जुड़ियोड़ी हुया करै।

आदमी खुद री ओळख खुद हुया करै, अर इण भांत कवि लोक में भेदभाव अर गैर-बराबरी नै सुभाविक मानण वाळी बरसां सूं बण्योड़ी इण धारणा नै चुणौती देवै कै 'सगळी आंगळियां बराबर नीं व्है'। पारंपरिक धारणावां जठै मिनख नै आतम-ग्यान सारू चित्त रै अेकांयत री साधना रौ महत्व समझावै, कवि पारस अरोड़ा कविता में इण बात री पुरजोर हिमायत करै :

आदमी / आदमी सूं इज नीं / घर-गळी-गवाड़ सूं लेय'र / देस अर दुनियां तांई जुड़ जाया करै।

इण भांत वै अेकांयत री साधना री ठौड़ मिनख सूं मिनख रै जुड़ाव रौ महत्व समझावै। लोकतंत्र में आतम-विकास सूं बधीक महत्व व्है लोक-विकास रौ, आतम-चेतणा सूं बधीक हितकारी व्है लोक-चेतणा, जिकी लोकतंत्र री नींव मजबूत करै।

'जुड़ाव' संग्रै रै तीजै भाग 'आगै औ पसराव' री कवितावां पण कवि री इणी समाजू-चेतणा रौ पसराव सांम्ही राखै, जिकी आज रै बगत अर हालात नै औरूं गैराई सूं समझण री आस जगावै। आं कवितावां में 'अंधारै रा घाव', 'बाकी हिसाब', 'कंपोजिटर', 'तूटतौ सम्मोहन' अर 'लावौ दौ माचिस' सरीखी गाढी जन-संवेदणा वाळी कवितावां जिण नवै पाठ री सिरजणा करै, वौ राजस्थोनी कविता में पारस अरोड़ा नै न्यारी ओळख देवै। यूं तौ भारतीय समाज-व्यवस्था अर आजादी पछै री राजनीतिक व्यवस्था सूं मोहभंग नै लेय हिन्दी अर भारतीय भासावां में अलेखूं कवितावां लिखीजी, पण पारस अरोड़ा उण मोहभंग रै साथै आपरै बगत में कायम उण सामंती समाज री रूढ़ियां, उणरै अंतर्विरोधी आचरण अर आज रै नागरिक जीवण में समायोड़ी पूंजीवादी मनगत अर कुटळायां रा दरसाव जिण भांत आं कवितावां में संजोया, उणरी वजै सूं अै कवितावां अेक न्यारै सुर-सुभाव री ओळख बणावै। 'तूटतौ सम्मोहन' कविता में कवि अेक आम भारतवासी री हालत अर उणरी सम्मोहन-दसा रौ हवाल उकेरतां लिखै :

इण सईकै रौ सबसूं बडौ / करतब कैवूं कै इचरज वौ सगळा काम करै / चालतौ फिरतौ दीसै खुद रा हाडक / खुद इज पीसै पण जाणै किण नींद में डूबोड़ौ / बरसां लग नीं जागै।

सबदां रै जादू रौ सम्मोहन भारी है।

पण बीसवीं सदी रा पाछला बरसां में जिण भांत औ मिनख आपरै अणभव सूं खुद री दसा-दिसा अर हालात री असलियत नै समझण लाग्यौ है, जिण भांत व्यवस्था रा पोत चवड़ै आया, वौ सम्मोहन अबै तूटण लाग्यौ है, उणरी समझ नै सचेतण करण में नवी पीढी री भागीदारी कांनी संकेत करतां वै कैवै :

अरथां रै आंगणियै सबदां रौ सम्मोहन तूटण लागगौ / बेटै रै जगायां बाप ई जागगौ समझ में आयगौ सम्मोहन सार फगत ना देवै जित्ती वार।

पारस अरोड़ा री कवितावां री अेक मोटी खासियत है वांरै बयान री सादगी अर सहजता। वै हळकी-फुळकी बंतळ रै लहजै में किणी गैरी बात नै इत्तीस सहजता अर सुथराई सूं कैय जावै कै वांरी बयानगी री ऊंडी अरथावू व्यंजना पाठक नै इचरज में छोड जावै। 'लावौ दौ माचिस' कविता में वां बयानगी री इणी कळा री ओळख दीवी है। अेक बानगी आपरी निजर :

हां, लावौ दौ माचिस, / म्हैं विस्वागस दिरावूं कै म्हैं इणरौ कीं नीं करूंला। बीड़ी सिळगाय दोय कस खेंचूंला / अेक आप ई खेंच लीजौ पछै सोचांला— / आपांनै कांई करणौ है— थांरी पेटी थांनै पाछी कर दूंला।

इण कविता में माचिस री तूळी रै ओळावै वै जिण जनवादी चेतणा नै जगावण री बात करै, वा परतख बयानगी में जित्ती सहज अर साधारण-सी लागै, आपरै अरथ-संकेत री गैराई में उत्तीज ई गंभीर अर बहुआयामी अरथाव री खिमता राखै। वांरी अेक औरूं कविता 'आग री ओळख' पण इणी भांत री गैरी व्यांजनापरक कविता है।

पारस अरोड़ा री कवितावां रौ तीजौ संग्रै 'काळजै में कलम लागी आग री' सन् 1994 में छप नै सांम्ही आयौ। इण संग्रै री कवितावां पण 'जुड़ाव' री उणी सुर-संवेदणा रौ पसराव सिरजती दीखै—आपरी बयानगी में कीं औरूं गैरी अर गाढी। 'जुड़ाव' रौ काव्य-नायक जिण घर-परिवार, पाड़ोस अर मुलक री जीवारी अर सुख-सांयत सारू आखी ऊमर अभावां अर अबखायां सूं जूंझतौ रह्यौ अर आपरी संतान भावी भारत सारू मोवणा सपना देखतौ रह्यौ, बगत परवांणै वौ भावी भारत पण काव्य-नायक री उणी जूंझ रै आड-जोड़ै आय ऊभौ हुयौ, जिण अगनी नै काव्यघ-नायक आपरै आंगै अंवेर राखी ही, वा ई अगनी भावी भारत रै काळजै री कलम बणगी— संग्रै री इणी सिरै नांव कविता में कवि आपरी उण अगनी नै इण भांत अंवेरण री हूंस दरसाई :

आंख्यां अटकी आस / सांस रा ताणा ताण्यां तणियोड़ी ही आखी उमर अंवेरी अगनी / अंतस री ऊंडी कोटड़ियां / जगियोड़ी ही / जागी / मून में मौजूदगी जागी रात बदळी देह अर / काळजै सूं काळजै में / कलम लागी आग री।

अर औ ई भावी भारत रौ सपूत आपरौ आपौ सांभ बाप नै आ थ्यावस देवै :

जावण दौ बाबा, यूं मतना कळपौ!

म्हैं आंनै जाणग्यौ / अै पैली कर अंधारौ पछै करै पल भर रौ पळकौ / चकाचूंध आंख्यां कर निजर बचा झटकै सूं / ले भागै स्सै कीं भर झपटौ पण परवा नीं / आदू अगन पीढियां व्हेती थारै सूं म्हारै में उतरी / म्हारै सूं आ जूझारू रूपां पसरैली / धीरै-धीरै बगत वायरौ / बदळ रह्यौ है।

अर इण भांत पारस अरोड़ा री कविता आपरी संपूरणता में जिकौ पाठ रचै वौ उणी अन्यावी सरूप अंधारै सूं अणथक जूझ अर बदळाव री हूंस बाबत आपरौ गाढौ आतम-विस्वास दरसावै :

थूं फिकर मत कर अबै / इणरौ तोड़ निकळैला / जूथ बंधणौ आयगौ है अबै लोगां नै सबदां अर हथियार बीचलौ / फरक पकड़ण लागगा सीखगा है सोचणौ-समझावणौ / खुली हथेळियां मुट्ठियां में / बगत पकड़ण लागगी / जिका लोग डाकी सूं लड़िया / वै ई घेरैला डाकू नै / बांध मोरचौ।

मुलक रा आं ई उळझ्योड़ा हालात नै लेय कवि पारस अरोड़ा अेकांनी आपरी कवितावां री मारफत आ चिंता दरसावता रह्या तौ केई दफै काव्य-चरचा में औ दरद पण अवस परगट व्हेतौ रह्यौ—आपरै संपादन में प्रकासित काव्य-संकलण 'अंवेर' री संपादकी में वांरी आ पीड़ा कीं अैड़ा ई सबदां में सांम्ही आई :

''सैर सूं लेय'र गांव लग बदळाव री हवा झपाटा मारती। आदमी रौ संबंध आपरै घर-परिवार रै प्रति इज नीं, खुद रै प्रति ई बदळगौ। संबंध में तिरेड़ां आयगी। फैसण रौ खिंचाव अर आरथिक हालात री तूट, आदमी नै मांय सूं तोड़ण लागी। जात-पांत, ऊंच-नीच, धरम-करम, देस-प्रदेस अर भासा आद रै नांव माथै आदमी इत्तौ बंट-फंटग्यौ कै धीरै-धीरै अेक पूरी सबदावळी अरथ-बिहूणी-सी व्हेंती लखावै। औ इज वौ भाव अर दीठाव है, जिकौ संवेदनाऊ स्तर माथै रचनाकार नै मांवौ-मांय मथै अर उणरै रचनाऊ ढाळै रूप लेवै।''

असल में आपणै लोकतंत्र री सगळां सूं मोटी अबखाई अर विडंबना आ रही कै आजादी मिळियां पछै आपणै मुलक री राजनीत लोकसेवा नै बिसराय वौपार बणगी, कोई पूंजीवादी राजनीतिक दळ आ नीं चावै कै जनता आपरा इधकार अर फरज ठीक सूं समझै अर आपरै विवेक सूं निरणै करै, वांरै जीवण री बुनियादी जरूरतां पूरी व्है, हरेक हाथ नै काम मिळै, लोकजीवण में सुख-सांयती वापरै, राजनीत में धरम-जात रौ दखल अर समाज में गैर-बराबरी खतम व्है, मुलक रा सगळा नागरिकां में भाईचारौ अर अेकौ कायम व्है—वै आपरै नीजू-हित सूं देस-हित नै बडौ मानै। अै तमाम मसला आजादी री लड़ाई रा जरूरी अंग हा, अर अेक उम्मीद ही कै मुलक री राजनीत आं ई असूलां अर लोकहित रा मसलां नै सुळझावण सारू काम करैला, पण वा उम्मीद कदैई पूरी नीं व्ही, इणसूं होळै-होळै आवता बरसां में लोगां रौ राजनीत सूं मोहभंग व्हेतौ रह्यौ, सत्ता में आवणियां लोग औरूं सुविधाभोगी अर छळगारा व्हेता रह्या। पारस अरोड़ा इणी राजनीत अर समाजू परिपेख सूं पीड़ा भोगतै जनमानस री अबखायां अर वांरै अणभवां नै लेय लारला बरसां में जिकी कवितावां रची, वै 'झळ', 'जुड़ाव' अर 'काळजै में कलम लागी आग री' नांव रा आं तीन काव्य-संग्रहां रै रूप में सांम्ही आई। कीं कवितावां औरूं पण है, जिकी हाल किणी संग्रै में नीं आई, पण वांरौ मूळ सुर इणी आफळ अर संवेदणा रौ विस्तार लखावै।

⌘⌘

71/247, मानसरोवर, जयपुर-302020
मो. 9829103455
ई-मेल : nandbhardwaj@gmail.com

डॉ. नीरज दइया

उपन्यास री गांठड़ी अर खुलती-घुळती गांठां....

'उपन्यास रो खाकौ तैयार व्हियां सोचण लाग्यो कै लिख लियौ तौ छपैला कठै?' आ ओळी कवि-अनुवादक पारस अरोड़ा री है, जिकी वां बरसां पैली आपरै उपन्यास 'खुलती गांठां' (1977) में भूमिका लिखतां लिखी। औ उपन्यास पोथी रूप छपण सूं पैली 'लाडेसर' (सं. रतन शाह) छापै में 'जांण्या-अणजांण्या' नांव सूं किस्त-वार छपणौ चालू हुयौ, पण पूरौ हुयां पैली 'लाडेसर' छपणौ बंद हुयग्यौ। इण री अेक किस्त 'हरावळ' में छपी अर पत्रिका बंद हुयगी। सेवट तेजसिंह जोधा रै संपादन में 'जागती जोत' पत्रिका में औ उपन्यास किस्तवार पूरौ छप्यौ अर घणौ चरचा में रैयौ। पोथी रूप जुगत प्रकासण, जोधपुर सूं सांम्ही आयौ।

अै सगळी बात राखण रौ मायनौ औ कै पारस अरोड़ा घणी ऊरमा वाळा लेखक हा, वां बरसां पैली 'करमा काकी' नांव सूं ई अेक उपन्यास लिखण री मनगत करी, पण प्रकासण री अबखयां रै रैवतां पार कोनी पड़ी। जीवण रै लारलै बरसां वै आपरै जीयाजूण अर घर-परिवार नै लेय'र अेक आत्मकथात्मक उपन्यास लिखण री बात दो-तीन बार म्हारै सूं करी। गुजरात अर राजस्थान री जमीं सूं जुड़ियौ जिकौ उपन्यास पारसजी रै मगज में हौ सांम्ही नीं आय सक्यौ। 'अपरंच' (जुलाई-दिसम्बर; 2012) गद्य विशेषांक में जिकौ उपन्यास-अंस 'जूझ' नांव सूं सांम्ही आयौ, वौ हुय सकै उणी उपन्यास रौ अंस हुवै। किणी लेखक री खरोखरी कूंत नीं हुवण रै लारै केई कारण हुवै, जिणमें सगळा सूं मोटी बात पत्र-पत्रिकावां री कमी अर पोथी छपण री अबखी आड़ी गिण सकां। 'बेतारीख डायरी रा पांना' नांव सूं वांरी डायरी बरसां पैली छपणी ही, पण नीं छपी। वांरी जूनी डायरी सूं आपां जाण सकां कै लिखण-बांचण री जबरदस्त हूंस वाळा वै जीवट लेखक हा।

पारस अरोड़ा री ओळख 'राजस्थानी-1' रै कविरूप आखी जूण रैयी, अर रैवैला। उपन्यास विधा री बात करतां 'खुलती गांठां' रौ जिकर बरोबर चालतौ रैयौ, पण उपन्यासकार रूप वांरी कूंत विगतवार कोनी करीजी। विगत आ है कै पारस अरोड़ा (1937-2015) बरस 1963 सूं लिखणौ सरू करयौ। जीवण रै छेहला दिनां तांई गद्य अर पद्य, दोनां में सास्ती लिखता रैया। वांरै गद्य लेखन पेटै फगत अेक पोथी 'खुलती गांठां' उपन्यास आपां सांम्ही है। इण उपन्यास नै राजस्थान क्लब, नई दिल्ली रौ डालमिया पुरस्कार ई मिल्यौ। बियां वांरै गद्य लेखन में आपां

कहाणियां, आलोचना-परख सिरजण, संपादकीय, डायरी लेखन, अनुवाद आद ई गिण सकां। म्हारौ मानणौ है कै जे फगत अेक गद्य-पोथी 'खुलती गांठां' ई गिणां, तौ ई सिमरध गद्यकारकार रूप पारस अरोड़ा री ओळख बरसां रैवैला।

राजस्थानी गद्य रै विगसाव में आजादी पछै लोककथावां री अेक बंधी बधाई भासा देख सकां। उण मांय कैवणगत कीं बेसी निजर आवै। पच्चीस-तीस बरसां पछै लोककथा रै उणियारै सांम्ही जिकी लोकभाषा आपरौ आपौ सांभती निगै आवै, उणमें पारस अरोड़ा रै इण उपन्यास री भासा नै खास तौर सूं गिणावणी पड़ैला। असल में आ भासा जीवतै जागतै लोक अर जनजीवन री भासा है। 'खुलती गांठां' री असल हेमाणी उण री भासा मानी जावैला, जिकी ओळी-ओळी पारस अरोड़ा जैड़ै लूंठै गद्यकार री खिमता नै बखाणै :

म्हैं आ नीं चावूं कै लोग थां दोनां रा नांव लेय 'र कान-मूंडा नैड़ा करै। **(खुलती गांठां, पेज 18)**

सूरज री बात सुण 'र रतन रै लीलाड़ माथै सळ पड़गा। वौ कीं बोलै इणसूं पैलीज स्यामा तड़की— ''वाह, वाह! कांई बात है आजादी री! बिना सोच्यां-समझ्यां प्रेम-प्यार करै जित्ती आजाद जरूर व्हैगी, पर-पुरस रै साथै रास रमै जित्ती आजाद जरूर व्हैगी। पण अकेक सही बात सोचै जित्ती आजाद कोनी व्ही, क्यूं? अरे, मिरच खायां सूं मूंडौ बळैला, आ बात तौ हरेक समझ सकै। **(खुलती गांठां, पेज-27)**

सरस संवाद, रळियावणी भासा सूं औ उपन्यास आज रै संदर्भां मांय ई प्रासंगिक कैयौ जाय सकै। 'खुलती गांठां' नै आज ई बांचां तौ कथा-बुणगट मांय चित्रात्मकता, रंजकता अर प्रवाह सूं प्रभावित हुया बिना कोनी रैय सकां। सैर आयां उपन्यास रौ खास पात्र सूरज आपरै साथी तेजसिंह नै गांव कागद लिखै, वै कागद युवा हियै रौ उमाव अर काळजै री कळझळ नै गैरै तांई दरसावै। कैय सकां कै जोधपुर रै रंग रंगी सजीव भासा गद्य री जमीन माथै पैलपोत 'खुलती गांठां' जैड़ै उपन्यास मांय साकार हुवै अर उण बगत बदळतै उपन्यास री आ अेक बानगी निजर आवै। इण रै मारफत आजादी पछै रौ जोधपुर अर बदळाव री जमीन माथै ऊभी हुवती पूरी अेक युवा पीढ़ी आपरी मनगत अर नवौ सोच-विचार लियां पळपळाट करती दीसै।

उपन्यास 'खुलती गांठां' बांचणौ चालू करयां पछै—आगै कांई अर कियां हुयो, जैड़ा सवाल मन नै जक कोनी लेवण देवै। औ उपन्यास जद किस्तवार तेजसिंह जोधा 'जागती जोत' में छाप्यौ, तौ बांचणिया उडीक करता कै आगै कांई हुवैला। धुन रै धणी अर कलम रै कारीगर जनकवि गणेशीलाल व्यास उस्ताद नै समर्पित इण उपन्यास 'खुलती गांठां' में कथा रा केई-केई रंग है, तो बातां भेळी केई-केई बातां उपन्यासकार भेळै राखै।

उपन्यास री बोवणी बरसां पैली श्रीलाल नथमल जोशी 'आभै पटकी' (1956) रै मारफत विधवा-ब्यांव री समस्या राख 'र करी, उणी रौ आगलौ मुकाम 'खुलती गांठा' (1977) नै मान सकां। क्यूं कै इण उपन्यास में ई विधवा अर बलात्कार री पीड़ित तारा नै सूरज स्वीकार करै। असल में सूरज रौ तारा नै स्वीकारणौ नवै जुग री थरपणा कैय सकां। अजेस ई उपन्यास जातरा मांय देखां तौ मूळ नै मोटी बात बदळाव अर अबला जीवण सूं जुड़ी सांम्ही आवै। 'खुलती गांठा' में सूरज रौ तारा नै अपणावण रौ फैसलौ, फगत इणी उपन्यास रौ नीं; राजस्थानी उपन्यास रौ मूळ सुर मान सकां। समाज मांय ऊंच-नीच अर जात-पांत बिचाळै बदळती मनगत रौ

जिकौ सुर बरसां पैली पारस अरोड़ा उगेर'र आधुनिकता नै जाणै थापित करै, आज रै संदर्भ में बात करां तौ इणी ढाळै री गांठां बिचाळै बदळती सामाजिक मनगत रौ नवौ दरसाव भरत ओळा 'घुळगांठ' (2009) में राखै। सामाजिक गांठां जद पारस अरोड़ा रै हवालै सूं बरसां पैली खुलगी तद ई म्हैं 'घुळगांठ' बाबत लिखतां लिख्यौ— ''गांठ कोनी गंठजोड़ो है घुळगांठ''। ओळा आज रै समाज में मानवीय-जातीय कुंठावां नै सांवठै रूप सूं राखता थकां जाणै ओलै-छानै कैय देवै कै जड़ां दावै जैड़ी ही, पण इण भेळप अर भाईचारै रौ आज साच साव न्यारौ है। कांई इण ओळी रौ औ मायनौ है कै पारस अरोड़ा री निजर जठै जड़ां कानी रैयी तौ भरत ओळा रै हवालै पारस अरोड़ा पछै रै उपन्यास री निजर रूंख कांनी रैयी ?

किणी उपन्यास री सगळा सूं जरूरी बातां मांय अेक-बांच्यां पछै आपां नै कांई-कांई खास चेतै रैवै। 'खुलती गांठां' रै रचाव मांय चरित्रां नै सांम्ही लावती बगत पारस अरोड़ा रेखाचित्र विधा रौ प्रयोग करयौ। चरित्र री ओळखावण करावण पेटै जिका उणियारा उपन्यासकार सिरज्या वै भासा रै पाण बांचणियां री आंख्यां सांम्ही हरेक पाठ सूं सजीव हुवतां लखावै। दाखलै रूप उपन्यास रा अै दाखला देखां :

अेक सोळै-सतरै बरसां री जवान छोरी आपरौ घड़ौ-चरी भर गरणै नै निचोय'र उणरी इडोणी बणावती अठी-उठी देखण लागी, इत्तैक में अेक बीस-बाइस बरसां रौ जवांन बड़लै री आड सूं निकळ'र उणरै सांम्ही आय ऊभौ। गेवूं बरणौ रंग, जवानी रै पांणी सूं पळकती आंख्यां, मुळकतौ चैरौ, चिलकतौ लीलाड़— बूढा-बडेरा देख'र थूथकौ न्हाकै जिस्सौ ओपतौ सरीर। औ हौ लाभजी सेठ रौ लाडेसर बेटौ सूरज। **(खुलती गांठां, पेज 10)**

पचास नैड़ी उमर रा ओमा म्हाराज रौ रंग पक्कौ, दूबळौ सरीर, करड़ी मैणत अर दुख री चितावां सूं झुकती-सी कमर, चौड़ै माथै केसर री आंगळियां फिरयोड़ी, कानां री लोळ माथै केसर री टीकियां, गळै में रुद्राक्ष री माळा, तुलसी री माळा। धोती माथै बनियान अर बनियान माथै बंडी पैरियोड़ा छतरी ताण्योड़ा सांम्ही आयगा हा। **(खुलती गांठां, पेज 12)**

उपन्यास मांय गांव अर शहर रै जीवण मांय बदळती मानसिकता रौ ठीमर बखाण जसजोग मिलै। रूपाळू गांव रै मांय पिणघट हुवौ का घर-गळी-गवाड़ रौ चितराम का फेर जोधपुर री बसावट रौ बखाण करती बगत जाणै उपन्यासकार दुनिया रा दोय रंग जोड़ैसर राखै। अठै खास उल्लेखजोग औ पण कैय सकां कै सड़कां अर आधुनिकता रै रंग मांय रंगीजती दुनिया री बातां बिचाळै मार्क्स रौ जिकर ई रोम रै मारफत ठौड़-ठौड़ हुवै। अमीरी अर गरीबी री बातां भेळै पारस अरोड़ा रै उपन्यास 'खुलती गांठां' मांय सोम रौ चरित्र उण री विचारधारा कठैई-कठैई खुद उपन्यासकार री विचारधारा सूं मेळ खावती लखावै। उपन्यास में लेखक री मनगत अर मार्क्सवादी विचारधारा रै अलावा प्रेस-कंपोजिटर रै काम पेटै ई केई दीठाव मिलै। खुलती गांठां आत्मकथात्मक उपन्यास कोनी पण फेर ई आपरै पूरै कलेवर में केई घटनावां-प्रसंगां रै पाण लेखक री विचारधारा रौ असर उपन्यास माथै देख सकां।

सूरज इत्ता दिनां में सोमनाथ रै बारै में खासी बातां जांणगौ हौ। सोमनाथ अेक प्राइवेट स्कूल में मास्टर हौ, पण उणनै इण नौकरी सूं संतोस नीं हौ। चार सौ माथै दस्तखत कर ढाई सौ लेवणा, मन नै मांनै जैड़ी बात कोनी, पण आ ई अेक मजबूरी ही। साहित्य में उणरौ पूरौ

दखल। लोग कैवै के पक्कौ मार्क्सवादी है। आपरै मेळू स्वभाव रै कारण सगळां लोगां में चावौ हौ। **(खुलती गांठां, पेज-50)**

सेठजी रै गयां पछै सूरज नै न्हैचौ आयौ अर वौ उठै सूं प्रेस पूगौ। प्रेस में आय'र वौ सीधौ मोवनजी कंपोजिटर कनै पूगौ। वै प्रेस रा फोरमैन हा। थानवीजी प्रुफ री बाबत पूछियौ, तौ मोवनजी बोल्या— हाल घंटौ भर लागैला। दोयेक पट्टियां रौ करेक्सन-मेकप बाकी है सा। बारै पेजां रा प्रुफ तौ त्यार है। चार पेज बाकी है। **(खुलती गांठां, पेज- 57)**

उपन्यास रै कलेवर में केई केई घटना-प्रसंग साथै चालै अर किणी बात रौ मांयलौ आंटौ छेहली ओळी तांई बण्यौ रैवै तौ आ उपन्यासकार री सफलता मानीजै। उपन्यास रौ छेहलौ दीठाव देखां :

सूरज चोर निजर सूं मोहन कानी देख'र तारा रौ हाथ आपरै हाथ में लेय'र बोल्यौ— ''कर ली तुलना।'' स्यामा चट बोली— ''स्याबास।'' उणी बगत सोम अर निरमळा कार में आय बैठा अर कार आगै बधगी।

उपन्यास खुलती गांठां में सूरज, मोहन, तारा, स्यामा, सोम अर निरमळा री लांबी कथावां अर उपकथावां है, अर इण मांय केई मांयला आंटा है। आपरी काया मांय छोटौ-सो दिखै उपन्यास, पण घणी घेरघुमेरदार केई-केई बातां नै खळ-खळ बैवतै किणी नाळै दांई प्रवाह मांय रोचकता साथै बांचणियां नै ठेठ तांई जाणै बांध'र राखै। उपन्यासकार कथा बिचाळै अंतर्कथावां रौ सागीड़ौ जाळ रचै, खासियत आ कै सगळी कथावां अंत-पंत अेक दूजी सूं जुड़ परी मिनखीचारै रै मोटै साच री सिरजणा करै।

असल में मोटौ साच तौ बगत हुया करै अर 'खुलती गांठां' उपन्यास आपरै बगत नै अरथावै। गांव मांय सूरज अर तारा री प्रेम कहाणी, जात-पांत अर ऊंच-नीच रा केई-केई रिवाज, लोगां रा सुभाव अर बिना बात री बात, विधवा ब्यांव पेटै न्यारौ-न्यारौ सोच, पीढियां रौ फरक, सोसक अर सोसित वरग, धन री आंधी दौड, सहरी जीवन, बदळता संबंध, नवी पीढी रौ नवौ सोच, जमीदारां रौ सोसण, साच रै मांयलौ असली साच, युवा मनां रा सुपना, जबरजिन्ना री पीड़, अतीत रौ भळै-भळै सांम्ही आवणौ, काळजै री कसक, जूण री अबखायां, जीवण री जरूरतां आद कित्ता ई साच इण उपन्यास रै मारफत न्यारै-न्यारै रूपां मांय सांम्ही आवै।

'खुलती गांठां' मांय बदळतौ जुग मिलै तौ आधुनिकता रै विगसाव मांय परंपरा अर संस्कार असल में मानखै रै मोल नै कूंतै। सार रूप कैवां तौ मार्क्स रै मारफत आपरै बगत नै अंगेजती आ कथा मिनखीचारै रै मोटै काळजै री बानगी राखै। अेक-अेक कर सगळी गांठां नै खोलण री इण कथा मांय उपन्यासकार पारस अरोड़ा आ साबित करै कै कोई पण गांठ हुवै, वा समझदारी सूं बगत परवाण खोली जाय सकै। राजस्थानी उपन्यास जातरा मांय 'खुलती गांठां' अेक बेजोड़ उपन्यास है अर इण रै मारफत पारस अरोड़ा सिमरध गद्यकार रूप बरसां ओळखीजता रैवैला।

⌘⌘

● *आलेख*

श्याम जांगिड़

पारस अरोड़ा री छेहली कविता : अेक ओळखाण

राजस्थानी कविता में स्व. पारस जी अरोड़ा रौ अेक महताऊ नांव रैयौ है। वै सदीव मिनख री पक्षकारी में आपरी कलम चलाई। 'दुख और भी है जमाने में मुहब्बत के सिवा'—फैज़ अहमद फैज़ री आ ओळी पारसजी रै सिरजण माथै सटीक बैठै। वांरी काव्य-सिरजणा सदीव जण-गण रै इधकारां री रिछ्या अर सुविधाभोगियां रै पड़पंच री खिलाफत करती रैयी। वै आम जन रा कित्ता हिमायती हा। वाममारगी होवता थकां भी वांरी कवितावां में नारेबाजी कोनी मिळै, नीं ई कोई आंदोलनकारी हुंकार। कविता रै मारफत वांरौ विचार परगट करणै रौ ढब अलायदौ ई हौ। वै सीधी सरल भासा में अमोलक बात कैवण वाळा कवि हा। 'आपरै-म्हारै बिच्चै फरक', 'लौ, संभाळौ थांरी दुनिया', 'जुड़ाव' आद कवितावां इण बात रौ प्रमाण है। उणां रौ मानणौ हौ कै दुनिया नारा सूं कोनी बदळै—विचारां सूं बदळै। तद ई वांरी घणकरी कवितावां में सिरै रूप में अबखायां माथै विचारवान दीठ ई मिळै।

जुलाई, 2013 रै 'अपरंच' में अरोड़ा जी री आखरी कविता छपी। नीं जाणै कोई संजोग रैयौ या कवि नै आगूंच दरसाव हुयौ कै म्हनै अबै इण दुनिया सूं जावणौ है। वै आपरी आखरी भोळावण अपां नै सूंपग्या। इण कविता में वै बिगड़ चुकिया हालात तांई चेतावता थकां आपां नै पूछै—कांई आप म्हारै साथै मुहिम माथै चालोला? आओ, चालां अर इण दुनिया नै बदळां।

अपणी इण आखरी कविता 'बात री सरुआत' में वै लिखै :

बात अठै सूं सरू करां / के आप / कठै 'क तांई चालोला / म्हारै साथ!

इण कविता में उण समस्यावां कांनी संकेत है, जिणसूं अबखायां रौ वरणन करै वै फगत आपणै मुलक री ई नीं, आखै विस्व री भी है। घटती ओजोन पड़त अर जानलेवा प्रदूसण री भी कविता नै चिंता है :

केई जगै / धोवणौ पड़ैला आकास / फटोड़ी नदियां रै / केई जगै / देवणा पड़ैला टांका!

आज परकत सूं बेसुमान छेड़छाड़ होय रैयी है। पईसां खातर अंधाधुंध धरा-दोहन, रासायनिकां रौ उपयोग, गंदगी सूं गंधाती नदियां, कटता जंगळ आद सूं परकत रौ संतुलण बिगड़ रैयौ है :

परबतां री खुदती नींवां / अर खोखला व्हेता काळजा / रोकणा पड़ैला / रफू करणा पड़ैला / केई जंगळ!

सांस्कृतिक संकट तांई कवि कैवै :

कीं उडतोड़ा रंगां नै रोकणा है / कीं गमियोड़ा रंगा नै / शोध'र पाछा लावणा है।

जियां कै म्हैं ऊपरां लिख्यौ है, पारस जी री कवितावां में नाराबाजी कोनी मिळै—नीं ई कोई आंदोलनकारी हुंकार। अठै इण कविता में वांरी विचार-थापना रै ढंग सूं अपां अंदाजौ लगाय सकां कै वै आपरै वाम विचारां नै कियां परोसता! अठै वाम सुर देखणै जोग है :

टप्पर रा छप्पर उडग्या है / केई पेट / पूठ सूं बंतळ करै / धूजता हाथां री हथेळियां / मुट्ठियां बण रैयी है / म्हैं आंरै पगस में रैवूंला / थे किणरै पगस में हौ / तै करौ!

इण कविता रै मारफत पारसजी समची जगती नै मौजूदा खतरां सूं आगाह करै अर इण दिस काम करणै रौ आह्वान पण करै। आखी कमियां अर अबखायां बतावणै रै पछै आखिर में वै अपां नै कैवै :

बोलौ, चालोला म्हारै साथ / बताऔ, कठै सूं सरू करां काम? / बात री सरुआत कठै सूं करां?

अैड़ी कविता कदी-कदी ई लिखी जावै। पारसजी री आ अेक घणमोली कविता है। जद आ छपी तद दिल्ली सूं रमेश उपाध्याय पारसजी नै बधाई देवता थकां कैयौ कै म्हैं इण कविता रौ हिंदी अनुवाद कर रैयौ हूं। इण कविता री घणी धूम रैयी। पारसजी री आ कविता आपां रै खातर अेक चेतावणी है—समझ सकै तौ समझ भाईड़ा! नीं तौ फेरूं पछताणौ पड़ैला! स्व. पारसजी नै हियै-तणौ निवण!

पारस अरोड़ा विरला पुरस हा। वै आप कान सूं इण दुनिया नै सौ-कीं देयग्या। आपरी अमोलक कवितावां रै साथै-साथै वै आपरी देही भी मेडिकल कॉलेज नै शोध तांई देय दीन्ही। धिन है, उण हुतात्मा नै!

⌘⌘

'झळ'
कविता-संग्रै सूं

म्हैं अर म्हारी कवितावां

म्हारै सूं जलमी है
केई कवितावां।
म्हैं वांनै सजाई-संवारी
परणाय दी
कोरा कागदियां सूं
कीं हाल बैठी है कंवारी
लुक्योड़ी मन री कोटड़ियां में
ढक्योड़ी
भावना री, मानना री
झीणी ओढणियां सूं।
थे
म्हारै सूं इणां नै नीं
इणां सूं म्हनै ओळखोला
म्हारा दीठ—अदीठ रूप नै
इणां में ठौड़-ठौड़ खोजोला।

म्हारी आस रौ नाकौ—
म्हारी सांस रौ घेरौ—
नाकै-नाकै सबद जलमग्या,
अणगिण आखर रा घेरा में
घिरगी धरती।

आंख्यां में चितराम पसरग्या—
कानां सुणी भळै नीं सांची
आंख्यां अटकी तस्वीरां झूठी नीं व्हैला—
सूखै हांचळ होठ सूखग्या
स्रवण थाकग्यौ
कावड़ में परिवार घींसतां
केई द्रौपद्यां
चीरहीण व्हैगी पलभर में
अरजुन छोड दियौ रण-आंगण
धरती गिटगी बीज अर
करसौ भूखां मरग्यौ
मिनख
मिनख री आंख
आपरौ रूप देख डरग्यौ।

हाल केई तस्वीरां बाकी
सबदमाळ रा केई मिणिया गिणणा बाकी।

थे-म्हैं दोनूं जीवां हा
जीवै है अणगिणती सवाल
केयां रा उत्तर देय दिया
केयां रा उत्तर देवूंला
केयां नै उत्तर देवूंला।

थे म्हनै मती देखौ
देखौ कवितावां नै
कविता ढळिया चितरामां नै
चिमराम चढ्योड़ा रंगा नै—
रंग रंग सूं मिळ्यौ
रंग अेक नुंवौ निकळग्यौ
सबद सबद सूं जुड़्यौ
अरथ अेक नुंवौ थरपग्यौ।

⌘⌘

म्हां अपमानित

बारंबार अपमानित हुयौ हूं म्हैं
अपमानित हुया हो थै
म्हारा साथियां!

म्हांणै मांय सूं जद कदैई
कोई सड़क माथै आयनै गावै,
म्हां लोगां सूं
गावण रौ 'हुकमनामौ' मांगीजै;
म्हां जद कदैई
अंधारै में मंत्रणा करता
चैरां माथै
टार्च रौ प्रकास न्हाख्यौ,
छिप्योड़ा हाथां रौ
निसांणौ बणी टोर्चां;
म्हां जद कदैई
किणी मंच सूं
म्हांणी वांणी नै तांणी
म्हां अपराधी घोसित हुया।

म्हांणै माथै
कोरा सबद इज नीं
फेंकीजी पूरी किताबां
चेपीज्या
म्हांणा सबद माथै सबद
जिणसूं
कोई वांनै सुणै नीं
कोई वांनै भणै नीं
गुणै नीं।
जद कदैई कोई वांनै
सुण लिया, के भण लिया, के गुण लिया
तद ई समझौ
बदळ जासी नियम सगळा

चैरां माथै चढ्योड़ा सगळा मुखोळा
टूट जासी, तिड़क जासी
मांयलौ संसार धरती रूप
बारै निजर आसी।

⌘⌘

इतिहास-पख

लौ,
अेक पूरौ दळ रौ दळ
सांमी आयगौ है
इतिहास-पख।

पलोपल, पगोपग
चौफेर उजागर व्हेतौ
मौत मुंडै चढियोड़ी
गळियां अर मकानां सूं निकळ
मोरचो लेतौ
आयगौ चौरावै घुरकावतौ
इतिहास-पख औ साव सांमोसांम!

सूखोड़ी देहियां में
लेवती पसराव
जड़ां
बदळाव री,
अर समरथन रूप आं ऊंचा व्हियोड़ा
हाथां री खुल्ली हथेळियां
बंद व्हेय मुट्ठी में बदळीजण लागगी
रगत-रंग आंख्यां में उकळीजण लागगौ
कसोटियां चढगौ है बळ आदमी रौ
पण पीड़
किणी नपीणै नपीजी कोनी

चोट करण सारू
सधियोड़ा हाथां में
देख घण ऊंचियोड़ा
भाठां नै भंगीजण रौ भै खायगौ है
लौ, अेक पूरौ दळ रौ दळ
सांमी आयगौ है— इतिहास-पख!

जूंनी भींतां, गढां-मठां री
लेव खेरती
जगै छोडती जाय धमाकां समचै
खंड-खंड पाखंड पियोड़ी
नगरसेठ री नुंवी हवेली
नींवां झटका खाय!
संद उतरता गोदामां गिंदाय रैयौ है
काळ पड़ण री बाट जोवतौ
काळ पटकतौ
अर सेठां रौ नफौ बधातौ
धांन।
चकारा काट रैयी है
चीगदीज्योड़ी भूख
के जांणै प्रेतकथा रौ भूत
आपरै भख सारू भटकै भिमरयोड़ौ
दांत अर डाढ री भींचण
लंबूतरीजतै चैरै माथै तांण देवै हाडक
कनपड़ी री नस फरूकती भुजा साथै
खावै उछाळा
अर भेटी मारण सारू
अस्टपौर त्यार कोई भोडक
क्यूं के वौ देखौ हत्यारौ हाथ
फेर उण कंवळी जमीं माथै
घावां रौ दरखत उगायगौ है।
अबै उणरी हरकतां रा पडूत्तर देवण नै
अेक पूरौ दळ सांमी आयगौ है
—इतिहास-पख!

आपरौ आकास, आपरी दिसावां धारतौ
पगां हेटली जमीं माथै
खुद रै अधिकार री घोसणा करतौ
थोपीज्योड़ा अेकाअेक आरोपां री नींव खोदतौ
खुद रौ अेक 'सूर्यमंडल' उंचायां
वौ केयां रा 'प्रभामंडल' तोड़तौ
आयगौ है जवानां रौ जूथ— औ इतिहास-पख!

इतिहास-पख
के जिणरी किणी पुड़त
कोई इतिहारस-पुरस
उळझ्योड़ा नखतरां रा गणित नै सुळझावतौ
समूळै बदळाव री रूपरेखा धारतौ
नीं जांणै किण इकांत कठै बैठौ है
सांमी है जवानं रौ झुंड
अेक टोळौ— इतिहास-पख!

⌘⌘

'जुड़ाव' कविता-संग्रै सूं

जुड़ाव

सगळी आंगळियां अेक सरीखी नीं व्है
—इत्तौ कैवण सूं पूरी नीं व्है बात
जठै तांई नीं कैवां
के सगळी आंगळियां अंगूठै समेत
हथेळी सूं जुड़्योड़ी व्हिया करै!

आदमी
खुद री ओळख खुद व्हिया करै
आपरा तमाम
निबळा-सबळा अंगां-प्रत्यंगां समेत
गिणीजै जिणरी ओकोअेक हरकत
अर गवाही नै त्यार
जबान माथै आवणियौ
अरथ री तमाम गुंजाइसां रौ बोझ उंचायां
अेकोअेक सबद
आदमी री ओळख सूं जुड़्योड़ा व्हिया करै
आदमी खुद री ओळख खुद दिया करै।

आदमी रौ
अेक घर व्हिया करै
अेक कमरौ
जिणरौ वौ किरायौ दिया करै
कीं लोग
जिकां नै वौ परवार कैया करै।

परवार
पीढी-दर-पीढी पळतौ
वंस रौ अंस
अेक दूजै रै आधार
रुई री पूणी ज्यूं
तकळी माथै कतीजतौ
सूत रौ धागौ बण
कोया में लिपटीजतौ रैवै
कतीजतै सूत रौ तांणौ
केई वार
बट खाय'र
कमजोर जगै सूं तूट जाया करै
पण पूणी
पाछी उण तूट सूं जुड़'र
चालू राखिया करै कतई रौ काम

कोई पूणी, कोई तकळी, हाथ कोई
मैणत अर प्रेम रै मेळ रा
आपस में लिपट्योड़ा
कित्ता प्यारा लागै
अै घैघट रंग!

⌘⌘

अंधारै रा घाव

काळौ अर काळौ
अंधारौ घण-काळौ
हाड-हाड तोड़ रैयौ
औ काळौ अजगरी कसाव।

अंधारौ / काळस में गमियोड़ी दीठ
अंधारौ / अंतस में बळती आ लाय
अंधारौ / अेक देह कसती इज जाय
अंधारौ घण काळौ।

अंधारौ / घर काळौ
काळी है भींतां सै
काळी छत, काळौ है आंगणौ
तूटोड़ी बारी अर
अधतूटौ दरवाजौ जूझै
पवनभार धूजै
सोध रैयी अठी-उठी
दो आंख्यां डरप्योड़ी
कीं ई नीं सूझै।

कळझळतै अंतस में
पसरै कीं यूं सवाल—
लेय उडी बारी नै
वै आंध्यां क्यूं आयी?
दरवाजौ तोड़ दियौ
वौ किस्यौ बतूळियौ?
कर दै इण घर उजास
कठै तपै वौ सूरज?
कैवण रौ घर / क्यूं रैवण ज्यूं कोनी
कांई आ कारा है?
क्यूं कोनी बरतण ज्यूं
दीखत रा लोग अै
कांई मिनखा सूं न्यारा है?

सूखोड़ी रोटी बदळै
क्यूं राखै बोटी री आस ?
मैणत रौ मोल क्यूं
पेट रै तोल सूं छोटौ पड़ जावै ?
कांई इत्ती लंबी रात व्है
पीढी-दर-पीढी यूं पसरयोड़ी
हाड-पिंजर
तोड़ दै दम गुफावां रा जाळ में
अर मारग नीं लाधै
छोड दै आ कंदरा
इण कारा नै छोड दै!
घर बारै
दरवाजै ऊभोड़ै रूंख रौ
पवन पकड़ झंझेड़्यौ डाळौ
जीवण-मिरतु बिच्चै डोल रैयौ
चिड़ियां रौ माळौ।
काळौ— अंधारौ घण-काळौ।
अंधारौ....
लीर-लीर-लीतरा
अंधारौ....
पड़ूं-पड़ूं झूंपड़ी
अंधारौ
रिस्ता सैं किरच-किरच
अंधारौ....
बात-बात किच-किच है, थू-थू है
अंधारौ / घायल पग सोध रैया रोसणी।

अंधारौ लदियोड़ौ
अंधारै / अंधारौ
पुड़त-पुड़त काळस री
ज्यूं जमती जाय
रूप लै आकार
अर आकार
निराकार व्हेता जाय।

धरा चढी के तो आकासां
के आभौ पाताळ
लागै दिसा-दिसा में घुसगौ
जबरौ आळ-जंजाळ।

हाथ
हवा में ऊठै-घूमै
पाछा आ जावै
उरभाणा पग
ठोकर डर री बेड़ियां
खुभै-चुभै कांटा अर कांकरा
रूंख हेटै देह खोलै
थकेलै री गांठड़ी
अर बिसाईं खावै
घड़ी आंख लागै
घड़ी चेत आवै।
झोका हा नींद रा
जाग रा झरोका हा
दीठ सैं अदीठ व्हेतौ
अर अदीठ / दीठ।
पंपोळै आंगळियां देण अंधेरै री
काळै मारग ऊग्या
चवता घाव
घाव माथै घाव
चिगदगौ अंधारौ म्हारौ गांव
नीं रैयौ नांव।

जाणै कुण राजा
किण राजा सूं बैर लियौ
वौ फौजी अंधारौ
गांवड़ियौ घेर लियौ
राजा सूं राजा रौ
कैड़ौ दुस्मीचारौ
देख्यौ हौ लाल रंग
उण दिन वौ अंधारौ।

कांई वौ हड़प्पा
वौ मोअन-जोदरो
इण गत तो नीं मिळिया रेत में ?
दर्‌रां सूं—हिमगिर सूं
दक्खणी पठारां लग
अेक देह पसर्‌योड़ी
मदवै मद डूबोड़ी !
तीखा नख राजस री सगती रा
खुरच-खुरच खाज खिणै
खुद री इज देही नै
खुद लोहीझांण करै
क्यूं चूकै अैड़ै में
हमलावर अंधारौ।
अंधारौ....अंधारौ
पसरै ज्यूं जंगळ में
लागोड़ी लाय
सूतोड़ा सिंघ अठै सूता रै जाय।

जद-जद वौ यूं आयौ
मांडती रगत पगल्या
टिमटिमाता दिवलां री
बुझती गई जोत
दरवाजै-दरवाजै सूती ही लोथ
तद-तद कूंकूं पगल्या थरपीज्या
पासाणी देवत नै सीस झुक्या
अंजळियां
आकासां अरपित व्ही
हवन-कुंड सगती रौ
आवाहन करता हा।

बिन परख्यां सगती नै
सगती कुण कद मानी
सगती संहार रूप परखीजै
सगती मद उपजावै / गैळ चढै

प्रगटै जद सगती हथियार रूप
सस्तर री धार
वार
मार करै भारी
अर कुण झेलै वांनै—
अै अंधारी बस्ती री देहियां।

धारण कर सगती नै
बळी बणै अपरबळी
बळी चढै सगती नै
गढ-कोटां नींव पड़ी / बळी चढी
औ पड़तौ खांडौ
वौ घर खांडौ कर दीनौ
'धें' करतौ टूटोड़ौ टापरियौ बैठगौ।
यूं आयौ अंधारौ
यूं पड़ियौ घाव!

ऊग रैयौ
ऊग रैयौ
ऊगूणै सिंदूरी अगन-पुंज ऊग रैयौ
पळक-पळक आकासां
सूरज-धज फरक रैयौ
दीठ नीं जमै।
खड़....खड़....खड़ खड़ड़....खड़ड़
दौड़ रैयौ
दौड़ रैयौ
पूसणी तुरंगां रथ
चक्ररेख भोमखंड नाप रैयी
अस्वमेध पूजित है
अेक देह पसरीजै
रघुकुल रौ महाकाव्य
जदुकुल रौ महाभारत साखी है
कित्ता संबंध अठै
जुद्ध-हवन होमीज्या
अेक देह थरपण नै

रगत-धार बार-बार
बार-बार
सगती नै अरपित व्ही
धरम क्षेत्र / करम क्षेत्र मानीज्यौ।
टूट रैयौ अंधारौ, तिड़क रैयौ अंधारौ
लीर-लीर अंधारौ
किरच-किरच अंधारौ
घायल कर
घायल है अंधारौ।

⌘⌘

क्यूं इत्ता नाराज

इत्ता नाराज क्यूं हौ बापू
जे म्हैं नीं मांनी थांरी बात
गयौ परौ
थांरै बरजता थकां ईं बारै
लारै
थे उडीकता रैया म्हारी बाट।

कुण कियौ आकास इत्तौ बदरंग
दिसावां
क्यूं आपरी ओळख गमाय दी
क्यूं फेर जमीं
पांणी बदळै लोही री मांग करै ?

थे आंरा उत्तर नीं देय सकौ
परवा नीं,
म्हैं बिना उत्तर नीं रैय सकूं।
जे म्हैं गयौ परौ
गरम हवा

अर धारदार हालात साथै
गस्त लगावतै
खतरै सांमी / मुकाबलै सारू / मित्रां साथै
उकेरतौ सवालां रा जवाब
तौ क्यूं उदास आंगणै
थे बेराजी ओढ अबोला व्हैगा।
थे इज कैता
वां दिनां / उण बगत / नीं सुणी
किणी री थे
अर निकळगा हा बारै
आपरी जमीं / आपरै आकास री
घोसणावां करता
नरभक्सी, अंधारी दिसावां रै मांय
लारै—थांरी बाट जोवती रैयी
घर री थळी
तूटोड़ी मचली नीचै, फाटोड़ी जूत्यां
अेकांनी उदास पड़्यौ
टाबर रौ गाडूल्यौ
तद सुणी कोई री थे
मांनी किणी री ?

फौलाद सूं बत्तौ मजबूत व्है आदमी
दावानळ सूं वत्ती तेज व्है, अंतस री लाय
थे साबित करी
भोटा पड़गा दमन रा तमाम हथियार
थां लोगां सूं टकरीज'र
पाछा पड़ण लागा हा, साही घोड़ां रा पग
थांरी अगन-झळ में अपड़ीज'र
खतरौ— उण बगत ई कम नीं हौ
सूखगी ही कटोरदान मांयली रोटी
दुखियारण रसोई में सोयगी ही
थांनै देण सारू झरूंटिया मंडाय'र ई
दोय पाका बोर लियोड़ौ
सोयगौ हौ म्हैं / थांरी बाट उडीकतौ

दादोसा री मारग मुखी आंखियां
नीं झपकी ही सारी रात।
हाल ई / भर-सरदी देखूं थांनै टसकता
उण रात जिण विध थे झेल लिया वार
पसवाड़ा फेरण लागै वा जूंनी मार
उण बगत थे
सगळा रिस्ता झाड़-झटक
गया परा बेलियां रै लार।

पच्छै, इत्ता नाराज क्यूं हो बापू
जे म्हैं नीं मांन थांरी बात
म्हांणी बात / म्हाणी जमीं / म्हांणै आकास सारू
देखौ बापू
इण बदरंग व्हियोड़ै थांरै आकास सारू
गयौ परौ काटीज्योड़ै फौलाद रा
छिलका उतारण
लैय रंदौ
बणा टोळौ
गुण-अवगुण थांरा कीं पालतौ
रैवूं म्हैं चालतौ
धरौ
धरौ म्हारै मौर थांरौ हाथ
बापू, इणमें नाराजगी री किसी बात।

⌘⌘

आग री ओळख

आग फकत वा इज तौ नीं व्है
जिकी निजर आया करै
झळझळाट करती अगन
दीखै कोनी

पण रेत माथै बिछ जाया करै
पग धरां तौ सिक जाया करै
आग रै उपयोग सूं पैली
उणरी ओळख जरूरी
कांम काढण सारू वा
पूरी है के अधूरी
औ जाणणौ जरूरी।

बगत पड़ियां आग
उपजावणी पड़ै।
नीं व्है तौ अठी-उठी सूं लावणी पड़ै
ठंड रै भाखर हेटै
दब'र मरण सूं पैली
आग उपजाय
ठंड नै पिघळावणी पड़ै।
जठै
निजर आवै आंख में ललाई
नस-नस चैरै माथै तणियोड़ी
भींच्योड़ी मूठियां
फणफणावता फुणिया
अर सांस-गती बधियोड़ी
समझलौ, उण जगै आग सिळगगी है।

कैवै
के राग सूं ई आग उपजती ही
सबदां सूं परगटती
अगनी नै देखी हां
झेली हां,
बरसां सूं पोख्योड़ी अगनी नै
दबियोड़ी आ अगनी
काढणी है थनै
जे आग लागगी
बुझावणी थनै है
बुझगी जे सोचलै
लगावणी थनै है
सोचलै के आग नै पिछाणणी थनै है

कित्ती अजीब बात है
लोग
हथेळी माथै हीरै ज्यूं आग धर
उणरौ सोदौ कर लिया करै
आग नै
लाग ज्यूं काम लैय
आपरौ बगत काटण सारू
पीढियां री गरमी नै
गिरवी धर दिया करै।

पचतां-खपतां ई
नीं लाधै थांनै जे
कठैई कोई चिणग दबियोड़ी
कीकर वा पैदा व्है ?
सोच-समझ वा समझ
समझाणी थनै है।

पण सैंगा पैली थूं
अगनी सूं ओळखांण कर लीजै।

⌘⌘

'काळजै में कलम लागी आग री' कविता-संग्रै सूं

हिसाब

जा,
झूपै में दुबकजा रामला!
कोई नीं सुणैला अबार थारी
हरेक माथै
बगत भारी व्हैगौ है।

भारी व्हेगौ
कीड़ी नै रेलौ अर पंथी नै गेलौ
जळ गिटगौ माछळियां
पून सांस पीव
बीज गिटी धरती अर
बोवणियौ टीवै
आभौ करगौ मजाक
रितुवां नै डाक-डाक
फंफेड़ै धरती रा जायां नै
अैड़ै में थारी अठै
कुण सुणै रामला!

मारक मंसूबा धारयां
मारग बैठा है
जुळसा मुड़गा
चौरस्तै सूं अठी-उठी
घात लगायां
गुपचुप-सी गळिलां पसरी है
चलगौ है चौफेरूं चक्कर-सो
बोलण रौ बगत गयौ
करणै री हिम्मत व्है, कर

नींतर
करणियै नै करण दै, थूं देख!
फैसलौ थनै करणौ
कीकर जीणौ-मरणौ
मरणौ थनै पड़ैला इज
करणौ ई
थनै इज पड़ैला रामला!
गळियां अर मोहल्लां अर
चौरस्तां चालै तो
काठौ कर काळजौ
बण किराड़
फुरती सूं
साथै इज आव रामला!
अबै झूंपै सूं
बारै थूं आव रामला!

⌘⌘

लो, संभाळौ थांरी दुनिया

म्हैं कठी सूं ई खराब नी करी
थांरी दुनिया
ही जिणसूं फूटरी अर अकलमंद
नित नवा मान-मोल थरपती
आ दुनिया
पाछी थांनै घणै मान सूं सूंपूं
लो, सावळ संभाळौ थांरी दुनिया!

कित्तौ करियौ हेत'र
कैड़ौ बदळौ साज्यौ!
संवेटी ऊंचायां सगळी
सोरफ रा साधन दिया अनेक
ज्ञान-विज्ञान मुट्ठियां बंद
सिकुड़ती जाय धरा दिन-रात
पण

इण दिस में मुड़ती-मुड़ती
आ उण दिस क्यूं लुळ जाय
समझ नीं आय!
धार्‌यां अंग-अंग बारूद
जंग नै अस्टपौर तैयार
पिघळ्यौ मिनखपणौ आंख्यां में
नस-नस विस-थैल्यां रौ जाळ
होठां रगत-रंग पोत्योड़ी
तीखा नख धंसावती बोट्यां
इण सरीर
केई निसांण मंडियोड़ा
अर
आ ऊभी मुळकै है
थांरी दुनिया
तो ई जिणनै
चेप काळजै लायौ हूं म्हैं
लो, पाछी संभाळौ थांरी दुनिया!
बळ-बळ'र बुझावतौ रैयौ
बारूदी सुरंगां
विस-थैल्यां चीरी कीं घाव खाय
मर-खपनै माटी रौ मान कियौ
तूट्यां ईं तोड़्या कीं तेज दंत
इण बदळै—
धीरै-धीरै अै सगळा मिळ
देही नै कस लीनी
इण सिकंजै
तूटणै अर बिखरणै पैली
थां सूं लीनी
थांनै पाछी
सूंपूं थांरी दुनिया!
लो, संभाळौ
म्हैं कठी सूं ईं खराब नीं करी
थांरी दुनिया!

⌘⌘

सुण मन्नू

नीं मन्नू, नीं
फकत इण उदासी
औछत अर निसासां रै आसरै
नीं कटै अै करड़ा दिन।

थूं यूं थारी आंख्यां
म्हारै चैरै माथै थिर मत करया कर
पवन बतूळियौ आवतौ देख
आडौ मत दिया कर,
बारी बंद मत किया कर
जद बरसात बंतळ करण लागै
हवा-पाणी सूं बात करणी
सीख बावळी!
अै इज तौ हा
जिका थारी गैर मौजूदगी में
म्हनै बतळावता
उदासी बुहार, बारै न्हाक जावता
समझ आंरा इसारा
आंरी बातां
आंरा स्यारा
आंरी घातां।

●

नीं मन्नू, नीं
फाटोड़ा गाभा, खाली डब्बा, सूखोड़ा चैरा
भीतां रा पलस्तर, आंगणै रा खाडा अर
टूटोड़ा आडा देख'र
कद तांई उदासी रै आंगणै जीवां
कांई अर किणनै कैवां
अबोला रैय'र अरड़ावतै मन सूं
नीं व्है निभाव
इण रोजीना रै दीठाव रौ
कित्तौ अर कद तांई करैला छिपाव

यूं कर
थूं पीनियै नै रमा, म्हैं अेक गीत गावूं
थूं रंजी नै बुहार, म्हैं रंज नै उडावूं!
●

घणौ ई मन करै मन्नू
म्हैं थारै साथै घूमूं टाबरां समेत
उदासी री इण जकड़ में ई
थनै प्यार मिळै
अर टाबरां नै हेत
थूं टाबरां सारू हरियल धरती बणै
म्हैं चांद, सूरज, तारां समेत
सतरंगी आकास
अेक बार तौ
सुख री सगळी रमत रमां
(जद के म्हारी औकात रा हाथ
घणा छोटा अर निबळा है
अर इण बगत म्हैं थारै साथै
फकत
सबदां री रमत रम रैयौ हूं।)
इंछा आपां हरेक सुख री कर सकां
आजाद मुल्क रा वासी हां
चावां जद मार सकां मन नै
चावां जद मर सकां।
●

म्हारी हथेळी खासी गरम है मन्नू
म्हनै बुखार नीं है
ला, थारी ठंडी हथेळी
म्हारी हथाळी में दे दै।
चूल्है में आग नीं, नीं गरम राख
देही दांत गडायां बैठी सीयाळै री रात।
बरसौ-बरस काटता आया
अैड़ी केई रातां

आंख्यां में पीड़ा रा सरवर
भूख समंदर आंतां
थूं सुणती अर म्हैं सुणावतौ
सुख-सपना री बातां।
आव, आ रात ई काटां—
बता, दिनूंगै साग कांई बणावैला?
म्हारै मजूरी माथै गयां पछै
किसा-किसा कपड़ां रै
टांका लगावैला?
देख!
लियां हाथ में हाथ
कित्ती काट दिवी हां रात
बाकी रात काटणै सारू अेक सुणावूं बात—
कीं हा गरीब अर अेक हौ डाकी
वै सगळा उणसूं डरता अर
अेक-अेक कर मरता
अेक डोकरौ, अेक छोकरौ
बैठा इकांतां
घुसमुस-घुसमुस करता
पछै डोकरै बात बताई
पछै छोकरै जुगत जुड़ाई
भेळा व्हैगा लोग-लुगाई।
'पछै?'
पछै गरीब जीतै अर डाकी हारै
जीत जबाड़ै पड़गी केई जिंदगान्यां
तो ई जीवट-सिखरां चढिया नीं मान्या
पछै जागगा बंगला-कोठी
'ठैरौ-ठैरौ' करती आई तूंदां मोटी
डाकी नै घेरयौ अर बोल्या—
'मारयां लागै पाप, छोड दो
सजा देय, समझाय छोड दो
थे भारत री छाप छोड दो
औ इज चोखौ,
राखौ थे विस्वास
करां नीं थांसूं धोखौ।'

'पछै ?'
पछै अचूंभौ देख्यौ भारी
डाकी गयौ, आयगा डाकू
डाकी लेतौ प्राण दीखतौ
अै लेवै पण दीखै कोनीं।
आपां री रातां तो कांई
भर दोफारी काळी व्हेगी
अेक-दोय तीणा व्है ढकलां
जिंदगानी री जाळी व्हेगी
डाकी बारै सूं आयौ हौ, गयौ परौ
अै डाकू तौ इणी जगै रा
कीकर जावै ?
'अबै ?'
थूं फिकर मत कर अबै
इणरौ तोड़ निकळैला
जूथ बंधणौ आयगौ है अबै लोगां नै
सबदां अर हथियार बीचलौ
फरक पकड़ण लागगा
सीखगा है सोचणौ-समझावणौ
खुल्ली हथेळियां
मुट्ठियां में
बगत पकड़ण लागगी
जिका लोग डाकी सूं लड़िया
वै इज घेरैला डाकू नै
बांध मोरचौ।

ऊठ जरा, देख तौ
नीं रात बाकी, नीं बात बाकी
आयगौ,
लाल-पीळौ हुवतौ दिन डाकी
छूट रैया काळस रा खूंटा
आव अबै ऊठां
सून-मून अर आळस सूं छूटां।

⌘⌘

● *आलेख*

दुलाराम सहारण

झळझळाट करती अगन सरीखी है पारस अरोड़ा री कविता

जिण दिन / आदमी री हामी / नकारै में बदळीजण लागगी / खतरौ पैदा व्है जावैला / बंगलां री ऊंचाइयां नै...

– **पारस अरोड़ा** (जुड़ाव, पेज 56)

राजस्थानी कवि पारस अरोड़ा री कविता उण तबकै री दाझती पीड़ अर बेबसी बिचाळै आक्रोश प्रगटती अर सीख सूंपती कविता है जिकौ तबकौ झूंपड़ी कै सड़क कांठै बैठनै गढ, हेली अर राजसत्ता नै बरसां सूं चुनौती देवै। वौ तबकौ जिकौ आपरा हाड गाळ झांझरकै सूं सोपै तांणी रीजै अर बदळै में दोय रोटी सारू ई जूझै। पण साच तौ औ है कै अैड़ै तबकै सारू लिखती वळा घणौ कीं सोचणौ पड़ै। क्यूंकै औ तबकौ आकरा तजरबा राखै अर वांनै लिखणा कै प्रगटणा सौरा कोनी। सुख री बात घणी जी-सौरै सूं लिखीज सकै अर लिखती वळा लिखारौ खुद ई कीं सुख मैसूस कर सकै, पण जुद्ध अर पछैई वौ जीवण-जुद्ध अर वीं मांयला दाझता डाम लिखणा ? अैड़ै मौकां कदै-कदै तौ भासा रा सबद ई खूटती-सी लागै। कवि पारस अरोड़ा खुद कैवै :

किणी-किणी बात सारू / कदेई-कदेई इत्ती बडी भासा / ओछी पड़ जावै। **(जुड़ाव, पेज 9)**

पण इण तबकै रौ साच लिखणौ अेक खरै लेखक रौ जिम्मौ बणै। राजस्थानी कवि पारस अरोड़ा औ जिम्मौ समझणियां कवि मानीजै। क्यूंकै वै जाणै कै औ तबकौ आपरौ सो-कीं सूंपनै सांतरै समाज री थरपणा करणै री चेस्टा करै पण लोभी मिनखां री आ बस्ती वांरौ रगत चूसै, पसेव चोरी करै :

रगत-पुसप रौ रगत / जमानौ यूं चूसैला / पसेवौ म्हारौ यूं चोरी व्है जासी। **(जुड़ाव, पेज11)**

औ रगत-चुसाव देखणियै सारू ई दाझतौ हुवै। कवि सारू तौ बेसी दाझतौ। कमेरै तबकै री कमाई लूटेरौ तबकौ खोसै। वर्ग-संघर्ष री आ जूंण फगत जूंण-संघर्ष में जावती दीखै तद तौ मन और ई गळगळौ हुवै। कवि पारस अरोड़ा रौ मन ई इण फांस सूं दूखै :

देख / वांरा होठां री मुळक'र / आंख्यां री चमक / चमचेड़ / काळजौ पकड़ / ऊंधी लटकगी ही। **(जुड़ाव, पेज13)**

वांरौ मन तद तौ और ई दूखै जद सरकारी तामझाम आडै मिनख रौ भीरू नीं बणै अर सूंनै ढांढै री ज्यूं निजरबायरौ करनै आपरौ मारग नापै। कवि-मन अैड़ी थितियां रौ विरोध करै अर सबदां मारफत वीं तामझांम नै भूंडण री आफळ करै। कवि जथाजोग थिति रौ खाकौ खेंचनै पाठक री आंख्यां ऊघाड़णी चावै :

सरदी में— सूखोड़ी अमचूर ज्यूं / अकड़ीज्योड़ी / पिकासो रै चितराम नै / मूरत करती / नगर-पालिका री बाट उडीकती / किणी नागरिक री ठंडी देही। **(जुड़ाव, पेज19)**

कवि जाणै कै नागरिक री आ ठंडी देही री दाझ ई बीजी ठंडी हुवण नै त्यार देहियां में त्यागत सूंप सकै अर आक्रोश रौ अेक ऊबाळौ आयनै आंदोलन ऊभौ हुय सकै :

समरथन रूप आं ऊंचा व्हियोड़ा / हाथां री खुली हथेळियां / बंद व्हैय, मुट्ठी में बदळीजण लागगी / रगत रंग आंख्यां में उकळीजण लागगौ। **(जुड़ाव, पेज 21)**

पण कवि आ ई जाणै कै जुग रौ साच बीजौ है। पीड़ में पसळीजता हाथ ऊभा ई हुय सकै अर भय ई खाय सकै। क्यूंकै पीड़ नापबायरी है :

पण पीड़ / किणी नपीणै नपीजी कोनी / चोट करण सारू / सधियोड़ा हाथां में / देख घण उचियोड़ा भाटां नै भंगीजण रौ भै खायगौ है। **(जुड़ाव, पेज 22)**

औ भय नपीणै सूं नापण सारू जूझती पीड़ कवि पारस अरोड़ा नै तोड़ै कोनी। कवि तौ आपरी कलम में आग राखै अर वींनै बरतै, क्यूंकै कवि रै काळजै कलम री आग लागै। कलम जद तांणी नीं रूसै तद तांणी कवि हार नीं मानै। कवि आपरी सगळी ऊरमा कै पछै इयां कैवां ऊरमां सूं ई परबारै जोद्धावां नै सगती सूंपै अर समाज नै हेलौ करै कै जद कमेरौ तबकौ जागसी तद लूटेरै तबकै री नींव हालसी :

जूनी भींता गढ़ां-मठां री / लेव खेरती / जगै छोडती जाय धमाकां समचै / खंड-खंड पाखंड पियोड़ी / नगर-सेठ री नुंवी हवेली / नीवां झटका खाय। **(जुड़ाव, पेज 22)**

कवि हेलौ करै लूटेरै तबकै नै कै थे कमेरै तबकै रौ हक क्यूं मारौ ? थारौ औ रूप म्हानै अणखावणौ लागै। कमेरै तबकै री ज्यूं थे पसेव री बांण घालौ अर मिल-बांटनै कमावौ-खावौ। कवि फिकर करै कै आ बात समझता थकां ई क्यूं लूटेरौ तबकौ इयां करै :

सूखोड़ी रोटी बदळै / क्यूं राखौ बोटी री आस ? / मैणत रौ मोल क्यूं / पेट रै तोल सूं छोटौ पड़ जावै ? **(जुड़ाव, पेज-46)**

पण कवि आ ई जांणै कै औ लूटेरौ तबकौ कमेरै तबकै रै संगठन टोटै इयां करै। जे कमेरै तबकै रौ अेक लूंठौ संगठन हुवै तौ वींरी अेकठ लड़ाई साम्हीं चूसारां री चीं बोल जावै। खून चूसणियां आपरै बचाव रौ खूणौ ढूंढण लाग जावै। संगठन बडी-बडी त्यागतां नै सदीव हरावै, पण संगठन रौ टोटौ अेकल मिनख नै डरावै। अर डर बेड़ी घलावै :

हाथ / हवा में ऊठै-चूमै / पाछा आ जावै / उरभाणा पग / ठोकर डर री बेड़ियां। **(जुड़ाव, पेज 47)**

इणी कारणै लखपति करोड़पति बणतौ जावै अर करोड़पति अरबपति अर अठीनै नित रोटी रा टोटा भुगततौ मिनख जोकर बणनै समाज में ऊभौ रैय जावै :

अै ऊंची इमारतां सरू कर दी / झूंपड़ियां नै कस-कस'र मारणी ठोकर / बारै निकळियां पछै वौ / बण जावै 'मेटाडर' के जोकर। **(जुड़ाव, पेज 57)**

कवि पारस अरोड़ा इण आर्थिक ऊंच-नीच नै समझता थकां भूख रा चितराम तौ राचै पण वीं रचाव में आंदोलन अर क्रांति रौ हेलौ ई करै। इणी कारणै कवि पारस अरोड़ा नै राजस्थानी रौ रातौ झंडौ लेयनै आगै बधता कवि ई कैयीज सकै। जियां कामरेड कदैई हारै नीं, बियां ई कवि पारस अरोड़ा री कलम ई कदै हारै नीं। कवि री कलम आपरी धार नै नित तीखी करती चालै अर स्याही रौ रंग लीलै सूं रातौ हुवतौ जावै। औ रातौ रंग कवि नै गरीब रै पगथळी कील गडण सूं चूंवतै खून जैड़ौ लागै। पण पछैई भूख सूं लारौ नीं छूटै, क्यूंकै इण चुभाव रौ छेकड़लौ नखौ कोनी :

गरीब री भूख / फाटोड़ी चप्पल में चुभती / कील ज्यूं / अस्टपौर बणायां राखै / अेक चुभाव। **(जुड़ाव, पेज 57)**

कवि दुख रौ छेकड़लौ नखौ पकड़नै वींनै डूंगौ बूरणौ चावै अर खाद रूप में बदळनै नवी हरखती फसल निपजावणौ चावै। औ काम संभव ई हुय सकै पण इण सारू काम री बरौबर बंटवाड़ अर बरौबर पांती करण री हूंस चाइजै। पण समाज में तौ अबार थिति ई अजकी है :

जिकां कनै काम है / वै करै कोनी / जिका करणौ चावै / वांनै मिळै कोनी। **(जुड़ाव, पेज 59)**

कवि पारस अरोड़ा री दीठ मानै कै अै अजकी थितियां कमेरै तबकै रौ चिंतन बदळ्यां ई बदळसी। कमेरौ तबकौ जद अेक हुवणौ सीख जासी अर अेक हुयनै शोषण रै खिलाफ लड़णौ सीख जासी तद बात कीं बण सकै। वठैई कवि अरोड़ा मांनै कै देस आजाद तौ हुयगौ पण अबारलग शोषण सूं मुगती नीं मिली। कमेरै तबकै रा हाल माड़ा है। कवि कैवै कै कामगार थन्नै ई जागणौ पड़सी अर ध्यांन राखणौ हुयसी कै खुद री खाल घणी नीं छुलवावणी, खुद रौ पसेव अळौ नीं बैवाणौ। कवि कैवै कै जित्तौ मेहनतानौ मिलै बित्तौ ई रीजणौ। तिणखा रै अनुपात में काम। काम रै अनुपात में तिणखा। कमेरै तबकै नै फालतू रीजणौ अर हां-जी, हां-जी कैवण री बांण छोडणी पड़सी अर साथै ई राजनीति सूं बूझणौ पड़सी कै थे वोट ई लाटसौ कै कीं करण री तेवड़सौ ई :

घोड़ै रै चाबुक जोर सूं मारियां / सवारी पइसा वत्ता नीं दै भाई / यूं ताव नै मत पाळ / सावळ रास नै संभाळ / घोड़ै री नाळ उखळगी / थारी लटकगी खाल / थनै मिळौ नीं मिळौ / घोड़ै नै दाणौ देवणौ पड़ैला / वोट लाटणियै सूं पूछणौ पड़ैला / कद तांई रैवैला अै हालात। **(जुड़ाव, पेज 61)**

कवि पारस अरोड़ा कमतरियै नै हेलौ करै कै थूं सरतरियौ है, खुद नै कमतर नीं समझ। थारै हाथ में बीज नै तोपण री सगती है अर बीज में निपजण री :

औ है बीज / थै हौ हाथ / थांरी जो रैयौ है बाट / लौ आवौ ! / अठै इज, इण जमीं माथै। **(जुड़ाव, पेज 79)**

पण कवि नै दुख है कै आप में सगळी सगती हुवता थकां ई औ तबकौ जागै कोनी :

सगळा काम करै / चालतौ-फिरतौ दीसै / खुद रा हाडक / खुद इज पीसै / पण जाणै किणी नींद में डूबोड़ौ / बरसां लग नीं जागै ! **(जुड़ाव, पेज 54)**

कवि मानै कै जिकै दिन औ तबकौ खुद रै हुवण रौ अरथ समझग्यौ अर लूटेरै तबकै नै बकारण लागग्यौ, वीं दिन धरती धूजसी अर अेक नवौ पसवाड़ौ फोरसी। मिनख सूं मिनख रौ असली 'जुड़ाव' तद ई हुयसी। जिकै दिन आखी दुनिया रै आग री लपटां लगावण रा हथियार कमेरौ तबकै खोसनै खोगाळ कर दीन्हा वीं दिन वर्गभेद री बासती कठै सूं लागसी। जरूत है कमेरौ तबकौ वां हथियारां नै बरतणौ सीखै :

आपरी इण माचिस में तौ / चार तुळियां है / म्हनै तौ फकत अेक चाइजै / तीन तुळियां समेत / थांरी माचिस थांनै पाछी करदूंला। / लावौ, दौ माचिस / म्हैं विस्वास दिरावूं / कै म्हैं इणरौ कीं नीं करूंला। **(जुड़ाव, पेज 68)**

कवि पारस अरोड़ा बुर्जवा तबकै री दाझ नै समझणियां कवि हैं। साथै ई आगली पीढी अर पाछली पीढी री समझ रै फेर नै कूंतणियां कवि। कवि मायतां सूं हेलौ करै कै बदळाव विरोध सूं ई आसी, अर विरोध अर नवौ सोच टाबर बरतै तौ नाराजगी री कीं बात कोनी :

धरौ / धरौ म्हारै मौर थांरौ हाथ / बापू, इणमें नाराजगी री किसी बात। **(जुड़ाव, पेज 73)**

औ तौ आसीस सूंपण रौ बगत है, क्यूंकै शोषण नै समझनै हीयै में अगन जद झळझळाट करै तद आंदोलन रौ हेलौ हुया करै अर हीयै सिलगती आग दीख्या नीं करै, आपरौ असर ई करया करै :

आग फकत वा इज तौ नीं व्है / जिकी निजर आया करै / झळझळाट करती अगन / दीखै कोनी। **(जुड़ाव, पेज 77)**

'राजस्थानी-अेक' रा कवि पारस अरोड़ा आपरी कवितावां मारफत फोड़ा भुगततै मिनख नै सपना सूंपै। वठैई वां सपनां नै हरणवाळै तबकै नै ई चेतावै। कवि सबदां री अगन रै आंच सूं कमतरियां नै हूंस सूंपै तौ सरतरियां नै डरावै। कवि अर सबदां री आ ई असली त्यागत हुवै। पारस अरोड़ा आपरी कवितावां में इण त्यागत नै बरतणौ जाणै। अैड़ौ कवि राजस्थानी कन्नै हुवणौ अेक बडी बात है।

आज देही रूप में भलांई पारस अरोड़ा आपणै बिचाळै कोनी, पण आपरी सबळी कवितावां रै ओळाव सदीव आपणै बिचाळै रैयसी। बडी बात तौ आ है।

⌘⌘

प्रयास संस्थान, प्रयास भवन
ताजूशाह तकियै रै साम्हीं, धर्मस्तूप, चूरू-331001
मो. 94143 27734

● *ओळूं*

जनवादी कविता रा थंब हा पारस जी

✍ **आईदानसिंह भाटी**

वै घणा अबखायां अर कठण जीयाजूण-जातरा रा दिन हा। म्हैं जोधपुर विश्वविद्यालय में पढण सारू आयौ हौ। सालेक भर आज री अजीत कॉलोनी में, इण कॉलोनी में बंगलै रै लारै बण्योड़ा क्वार्टरनुमा कमरां में साथियां साथै रैयौ, जिणमें आज रा चावा एडवोकेट नरपतसिंह भाटी शेखासर अर हाईकोर्ट में ई प्रेक्टिस करणिया पोकरण रा मूलाराम रसोड़दार म्हारै साथै रैवता। पछै दूजा साथियां तौ आप-आपरा गेला देखिया अर म्हैं जाळप मोहल्ला में गंगारामजी हाकम साब री हवेली में साथियां-बेलियां साथै जाय जमियौ।

म्हैं पारस जी सूं पैलपोत आज रा राजस्थानी रा चावा कवि कथाकार चैनसिंहजी परिहार साथै मिळ्यौ हौ। वै वां दिनां कबूतरां रै चौक में रैवता हा। कबूतरां रै चौक में अेक तिराहौ बणै। अेक सड़क गांधी अस्पताळ कानी, अेक हटड़ियां रै चौक कानी अर अेक मकराणा मोहल्लै कानी जावै। पारस जी मकराणा मोहल्लै कानी जावण वाळी सड़क माथै अेक हवेली जैड़ै मकान में रैवता हा। सायत सिंझ्या रौ बगत हौ अर वांरै खोळै में अेक टाबर हौ। वांरी आ घरेलू-सी छिब म्हारी आंख्यां में अजै ई बस्योड़ी है।

पारस अरोड़ा वां दिनां प्रेस में काम करता हा। प्राईवेट प्रेसां में काम करणौ अर घर-गिरस्थी रौ गाडौ गुड़कावणौ घणौ अबखौ काम। वै म्हनै कई वेळा बंतळ करतां बतायौ कै म्हैं जोधपुर में घणी प्रेसां में काम कीनौ। आज री हाईकोर्ट रोड माथै जठै ललकार अखबार छपतौ हौ सायत, उठै ई वां काम कीनौ हौ। अर उठै सूं ई वै विजयदान देथा 'बिज्जी' कनै काम करण रूपायन संस्था बोरूंदा ई गया हा। जोधपुर विश्वविद्यालय प्रेस में लागण पछै वांरै जीवण में नैहचौ आयौ अर वांरी साहित्य री गाडी ई छुक-छुक करती आगै बधण ढूकी ही।

पारस अरोड़ा विचारधारा री दीठ सूं प्रगतिशील-जनवादी साहित्य रा सर्जक हा। राजस्थानी कविता में इण प्रगतिशील दीठ रा पगमंडणा कविवर ऊमरदान लाळस में नजर आवै। ऊमरदानजी माथै दयानंदजी सरस्वती अर आर्यसमाज रौ असर हौ। आधुनिक राजस्थानी कविता में वाम नजरियौ लावण आळा गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' हा। आ दीठ पारस जी री

कवितावां में ई परतख दीखै। 'झळ' री कवितावां इण मार्क्सादी दीठ नै पोखती नजर आवै। इण संग्रै री कवितावां— मून तूट्यौ, बधापौ, बरस जातरा अर इतिहास-पख कवितावां उण बगत घणी चावी व्ही ही। 'झळ' संग्रै री कवितावां मिनख रै मांयली 'अगन' रौ प्रतीक है। आ 'झळ' जद परजळै तद मिनख आपरी जीयाजूण में सचेतस बण'र रीढ तांण'र ऊभौ व्है जावै। 'बधापौ' कविता में पारस जी कैवै—

ऊठण लागा खिलाफत रा पग / कोई उळझियौ बाड़ में / कोई खाई गोळी, कोई खाई मार / धीरै-धीरै समझगा सगळा / कुण'र क्यूं वांरौ कर रैया उपचार / व्हैण लागौ अेकठौ उपचार सूं इनकार। **(जुड़ाव, पेज 15)**

राजस्थानी भासा में औ कविता-संग्रै जठै विसयवस्तु अर विचारां रै स्तर माथै न्यारी-निरवाळी कृति ही, उठै ई सिल्प रै स्तर माथै ई खास ही। अतुकांत छंद नै परोटण वाळी इण कृति में पारस जी गीतिकाव्य वाळी भासा ई परोटी ही। 'चोरी' नांव री आ कविता इण बात री साख भरै कै महाकवि निराला रौ गीति-छंद आळौ शिल्प पारस जी री इण गीत कविता में सांपरतेक लाधै—

खून सींचियां फूटी कूंपळ / परसेवौ पी बूंटौ फळियौ / म्हैं जाण्यौ— आ म्हारी मैणत / फूलां फळां मजूरी मिळसी / आ कद जांणी— तन विसरामां थपकी देतां / मन नींदड़ली पोथी पढतां / रात आंगणै / अंधारै री लगा निसरणी / चोर चांदणौ यूं कर दैला। **(जुड़ाव, पेज 11)**

'खून सींचियां' अर 'परसेवौ पी' जैड़ी श्रमशील समाज री मेहनत री आ 'कथ-कहाणी' पारस जी री खुद री जीयाजूण री गाथा है। राजस्थानी कविता में औ शिल्प तौ राजस्थानी रै कवियां परोटियौ हौ, पण औ मुहावरौ दूजौ हौ। गीति-शिल्प आळै इण असर सूं पारस जी बैगा ईज बारै आयग्या हा। यूं वांरी बोली जोधपुरी सहरातू बोली ही, जकी वांरी कविता में ठौड़-ठौड़ परतख व्है—

पछै, इत्ता नाराज क्यूं हौ बापू! / जे म्हैं नीं मांनी थांरी बात / म्हांणी बात / म्हांणी जमीं / म्हांणै आकास। **(जुड़ाव, पेज 73)**

आ 'म्हांणी बात, म्हांणी जकी, म्हांणै आकास' जैड़ी सबदावळी जोधपुर स्हैर री बोली है। पारस जी बोरूंदा ई रैया हा, आ बात म्हैं पैला कैय दीनी है, पण बोरूंदौ वांनै रास नीं आयौ हौ, आ बात ई वै म्हनै आत्मीय पलां में बतायी ही। 'झळ' री कवितावां में वै मानखै री मजबूरियां अर 'फैशन' नै आंमी-सांमी राख मिनखाजूण री पड़ताळ करै—

फाटोड़ा चींथरां में / उघड़तै डील नै / आवती लाज
डील उघाड़ण सारू / चालती फैसन री खाज।

इण कविता में पारस जी सरदी-गरमी अर बरसात में अभावां में डंकीजतै मानखै अर दूजी कानी राजनीति खेलतै मानखै रा घणा जबरा रूप दिखावै। वै कविता में कैवै कै 'मजूर रगत बेच करै मजूरी' पर 'खाडौ खाली रौ खाली', अर दूजै कानी वौ समाज है, जिकां री चिलक अर पळक अळगै सूं दीखै—

रातौ रंग चिलक रूपाळी, भरती जाय तिजोरी।
राजनीति रै हाथां व्हैतौ रै देसभगती रौ खून।

पारस अरोड़ा कैवै कै इण तरै बगत आगै निकळ जावै— *बूढौ बरस बाबौ चढ जावै इतियास पगोथ्यां।* इतियास पगोथियौ चढतौ औ मानखौ जिण तरै री जूण जीवै उणरी नाप-जोख ई कवि करै अर कविता में कथै—

इण तेल-लूण-लकड़ी में कई बार आदमी
छकड़ी भूल छकड़ौ बण जाया करै।

××

घर रौ खाडौ बूरण सारू केई खाडा खोदिया करै।

××

घर रै बारै आदमी जगै-जगै बंट्या करै
केई जगै कट्या करै।

××

अर सेवट इण कटाव सूं बचण रौ / उणनै अेक इज रस्तौ निजर या करै / कै आदमी आदमी सूं जुड़तौ जाया करै।

पारस अरोड़ा री कवितावां आपरै पूरै सामर्थ्य सूं शोषण रै चक्कै में पीसीजतै आदमी अर अमीरी में लड़ाझूम आदमी रौ भेद चवड़ौ करै। वांरी कलम वामपंथी दीठ सूं दुनिया देखण रौ अेक तरीकौ बतावै। कवि इण पीसीजतै आदमी रै मूंडै सूं कैवाड़ै—

अबै समझण लाग्यौ हूं म्हैं / के केई देस सेठ बणगा'र केई देस मुनीम / केयां में कमतर रौ राज है / अर म्हारी आ जिकी दसा आज है / यूं इज नीं रैवैला / अेक दिन बगत जरूर पलटौ तौ लेवैला / साहब जी!

पारस जी री कविता 'अंधारै रा घाव' भासा रै रचाव री रूपाळी बिम्बां वाळी ठावकी अर सांतरी कविता है, जिकी वामपंथी दीठ नै संवेदनशील रचाव सागै सांमी लावै। कवि कैवै—

जद जद वौ यूं आयौ / मांडतौ रगत पगल्या / टिमटिमाता दिवलां री / बुझगी ही जोत / दरवाजै दरवाजै सूती ही लोथ।

पण पारस जी रौ कवि कदैई निरास नीं व्है। वौ इण अन्यावी अंधारै रौ तोड़ ई बतावै—

ऊगूणै सिंदूरी अगन-पुंज ऊग रैयौ / पळक पळक आकासां / सूरज धज फरक रैयौ।

कवि मानखै नै कैवै—

रगत धार बार-बार सगती नै अरपित व्ही।

××

धरम-छेत्र करम छेत्र मानीज्यौ।

पारस अरोड़ा श्रमजीवी हा। आपरै कर्मछेत्र में काम करण वाळां 'कंपोजिटर' रै काम माथै वां संवेदनशील कविता लिखी। उणरै शोषण रै बिम्बां सागै ई पारस जी उणरी श्रम अर साधना री महत्ता ई उजागर कीनी—

साहित्य व्हौ के कळा-विग्यान / खोज खबर व्हौ के मान सम्मान
पग पग सगळां सूं जुड़ियोड़ौ औ / बरसां सूं इणनै भूल्योड़ा सैंग।

पारस अरोड़ा सूं म्हैं जद जुड़ियौ उण पछै म्हैं ई राजस्थानी रै म्हारै रंगां में बदळाव मैसूस करियौ। म्हारी कवितावां में जिकी प्रगतिशील-जनवादी दीठ है, उणरै परिवेस में पारस जी ई अेक खास नाम है। जद जनवादी लेखक संघ रौ राष्ट्रीय जळसौ जोधपुर में व्हियौ उण भागदौड़ में म्हारा गुरुदेव डॉ. विमल अर पारस अरोड़ा जैड़ा जुझार साथियां रौ खास योगदान है। श्री रघुनाथ धर्मशाला में व्हियै उण समारोह री याद आज ई म्हनै कालै ज्यूं लागै।

पारस जी री कविता 'लावौ दौ माचिस' म्हनै घणी सांतरी लागती। आपरै रचाव अर दीठ सूं आ कविता घणी चावी व्ही। वांरा साथी रमेश उपाध्याय आपरी पत्रिका 'कथन' में जद इण कविता रौ अनुवाद छाप्यौ तौ पारस जी रौ नांव चहुंकूंटां चावौ व्हियौ। आग री भली-भूंडी पड़ताळ करी ही पारस जी इण कविता में। वै कविता में आंचळिक अर स्थानीय बिम्ब तौ परोटिया ईज हा, जगां-जगां पाठक नै दुनिया में ई घूमा देवता। अेक नैनी कविता में वै कैवै—

औ नक्सौ है / अै अेसिया अर अफ्रीका / आंगळी धरूं / अर खून में भरीज जावै / अैड़ी बगत ठा पड़ै / के खोटै बगत में / खरौ पाड़ोसी कित्तौ काम आवै / मिळ'र छूट जा / तौ घणौ याद आवै।

पारस जी अरोड़ा अर म्हारौ संग-साथ जोधपुर में दसेक बरसां रौ हौ। इण संग-साथ में जोधपुर में होवण वाळी काव्य-गोष्ठियां खास ही। चैनसिंहजी परिहार वांनै बडा भाई ज्यूं मानता हा अर म्हारा ई वै बडा भाई हा। 'अपरंच' जद वां निकाळी तौ म्हैं ई वांनै अेक राजस्थानी गजल दीनी ही। म्हारी उण गजल में आयोड़ै 'उणियारै' सबद माथै वै म्हारै सूं सला-सूत ई कीनी ही, आपरी राय दीनी ही, अर पछै म्हारी बात मान'र वां ओळियां नै उण गत ई छापी—

आंख्यां मींच अंधारौ करणौ, कैवण री कुटळाई वीर!
वै अळगा ई ऊभा दीखै, आंख्यां रै उणियारै सूं।।

आपरी सारी जीयाजूण में संघर्ष कर'र लेखक, संपादक बण'र अपरंच रै मार्फत वै राजस्थानी भासा री मान्यता रै संघर्स रा बडा सिपाही बण्या। राजस्थानी भासा, साहित्य अर समाज सारू समरपित पारस अरोड़ा, इण राजस्थानी साहित्य-समाज नै दीनौ ई दीनौ। म्हैं जद डॉ. सोनाराम विश्नोई अकादमी अध्यक्ष हा, उण बगत वांरी साहित्य-साधना रौ मान बधावण सारू बिश्नोई जी सूं अनुरोध कीनौ तौ वां राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी कानी सूं वांरौ सम्मान कर म्हारी बात राखी। यूं पारस जी अजातशत्रु हा, इण बात रौ अंदाजौ वांरै स्वर्गवास पछै भेळौ व्हियोड़ौ वौ मानखौ हौ, जकौ म्हारी नजरां सांमी वांनै श्रद्धा-सुमन देवण सारू भेळौ व्हियौ हौ।

पारस जी रै देहदान री बात म्हैं वांरै बेटै गौतम अरोड़ा सूं उण जातरा में पूछी, जद म्हैं देवकिशनजी राजपुरोहित सागै गौतम री कार सूं बीकानेर सूं जोधपुर आयौ हौ। नीरज दइया री किताब रै लोकार्पण सारू म्हैं बीकानेर गयौ हौ अर उणीज कार्यक्रम में गौतम रौ आवणौ व्हियौ हौ। देहदान री बात बतावतां बगत गौतम री भावुकता अर परिवारजनां रै विश्वासां री अबखायां ई म्हारै सांमी आई, पण वांरी देहदान री 'कामना' अर 'इंछा' रौ परिवारजनां मान राख्यौ।

पारस जी सूं म्हारौ मिळणौ बराबर होवतौ रैवतौ। बाड़मेर-जैसलमेर सूं जद ई आवतौ तौ वांसूं मिळतौ जरूर। जद म्हैं पाली हौ, उण बगत गौतम पाली में मकान बणायौ हौ। म्हैं ई

पाली में बांगड़ कॉलेज में हौ, पारसजी म्हनै फोन कर'र हेत सूं उद्घाटण समारोह में बुलायौ हौ। पाली जैड़ै व्यापारिक स्हैर में नीं म्हारौ मन रमियौ अर नीं पारस जी रौ। म्हैं बाड़मेर गियौ परौ अर पारस जी भी पाली छोड'र पाछा सरस्वती नगर, जोधपुर आय बसिया। वांरी जीयाजूण नै कीं थ्यावस मिळी, पण जिका घाव वां खाया, वै तौ 'अंधारै रा घाव' कविता में परतख व्है। रूपास अर बिम्बां वाळी इण कविता में कवि वामदीठ नै निरवाळै अंदाज में सांमी राखै। पारस जी रौ हिम्मती मन अन्याव रै सांमी हार नीं मानै। भलांई कितरी ई अबखायां क्यूं नीं आवै। समाजू अर घरू जीयाजूण वांरी कलम सूं चितराम मांडै—

परवार / के जिणनै ढकण सारू / हमेस कपड़ौ ओछौ पड़ जावै / वौ उणनै ढकै / अर वौ उणनै / अर इण खींचताण में कदैई डावौ तौ कदैई जीवणौ / अंग उघड़ जावै। **(जुड़ाव, पेज 28)**

'काळजै में कलम लागी आग री' कविता-संग्रै में ई समाजू विडम्बनावां अर विचारधारा रा दरसाव हरेक कविता में साव निगै औ। 'खुलती गांठां' उपन्यास री कथा ई भारतीय समाज री पाखंडां री गांठां खोलै।

पारस जी म्हारै सूं कितरौ हेत-अपणास राखता, इण बात रौ प्रमाण अपरंच रै सलाहकार मंडल में दीनोड़ौ म्हारौ नांव है। म्हारी किताब 'आंख हींयै रा हरियल सपना' जद प्रेस में ही, तौ वां म्हनै घणै हेत सूं कैयौ, ''देख भाई! अकादमी थन्नै पुरस्कार नीं देवैला, तौ किणनै देवैला?'' म्हैं तौ कदैई पुरस्कार सारू सोचतौ ई नीं हौ। पण वै म्हारा हेताळू हा, इण सारू म्हनै आ बात आत्मीयता रै नातै कैयी ही। आज जद वां आपरी हेत-अपणास री आंख्यां मूंदली है, तौ म्हारै मन री बात किण आगळ करूं?

2012 में सेवानिवृत्ति पछै म्हैं होळी-दीवाळी वां कन्नै जरूर जावतौ। म्हारौ उठै जावणौ अेक पंथ-दो काज हा। ठीक वांरै सांमी म्हारै कॉलेज रा सहपाठी बेली भूरारामजी बिश्नोई रौ घर है। म्हैं जणै ई वां सूं मिळतौ, भूरजी नै साथै ले जावतौ। अेकर म्हैं दीवाळी माथै मिळण नै नीं जाय सक्यौ, तद वां ओळभौ फोन कर'र दीनौ, ''थूं इत्तौ मोटौ व्हैग्यौ कांई? आपां मिळण सूं ई गिया?'' अबै म्हनै मिळणौ तौ हौ ईज। म्हैं म्हारा कवि-नाटककार बेली दलपतजी परिहार नै लेय'र गियौ। म्हारै साथै दलपतजी नै देख'र वै मुळक्या। सायत कैय रैया हा— ''बचाव में ढाल लेय'र आयौ है।'' अर वै ओळभौ म्हनै नीं देय'र दलपतजी नै दीनौ हौ— ''वा भई दलपत, थन्नै ठा तौ पड़ी कै म्हैं ई सरस्वती नगर में रैवूं हूं।''

पारस जी अरोड़ा आधुनिक राजस्थानी री जनवादी धारा रा मजबूत थंबा हा। राजस्थानी कविता जिकी कोरी मंच रै सिणगारू अर गाईजण आळी लयकारियां में उळझ्योड़ी ही, उणनै विचार री दीठ सूं सबळाई देवण वाळा कवियां में पारस अरोड़ा रौ नांव घणौ महताऊ है। वांरी कवितावां राजस्थानी कविता री विरासत है।

⌘⌘

●*ओळूं*

पारस अरोड़ा री याद में

✍गोरधनसिंह शेखावत

पारस अरोड़ा राजस्थानी नुंवी कविता रा समरथ कवि हा। म्हारौ उणां सूं मिलणौ कम हुयौ पण रचना प्रकासण रै रूप में वै म्हारै घणा नजीक हा। म्हैं बरसां पैली री याद करूं तौ सन् 1965 में पारसजी 'जांणकारी' नांव सूं अेक पत्रिका छापी—छोटी पण सैंठी। अर सरुआत ई नुंवी कविता री अेक अैड़ी पिछाण ही कै नुंवी पीढी रा टाळवां कवियां री नुंवी संवेदनावां सूं जुड़्योड़ी कवितावां नै सांम्ही राखीजै। म्हैं वां दिनां पिलाणी में पढतौ। म्हारी भी कीं छड़ी-बीछड़ी नुंवी कवितावां अठीनै-बठीनै छपी ही। पारस रौ कागद मोती-सा आखरां में लिख्योड़ौ आयौ कै 'जांणकारी' पत्रिका तेवड़ी है, उण सारू रचनावां भेजौ। म्हारी छप्योड़ी कविता माथै दो वाक्यां में अेक टीप भी ही—'थारै सूं नुंवी कविता री सबळी ओळखाण बधसी।' तद म्हनै खुद री लिख्योड़ी कीं कवितावां सूं अेक भरोसौ बण्यौ अर म्हैं की कवितावां जांणकारी सारू भेजी। उणमें कीं कवितावां छपीजी भी। बस, अठै सूं पारसजी अर म्हैं नुंवै परिचै में जुड़्या अर अंत तांई जुड़्या रैया।

पारस अरोड़ा री कवितावां में समकालीन मिनख री या कैवणो चाइजै कै सन् साठ रै पछै री नुंवी मनगत रौ सांतरौ उल्लेख हौ। आजादी सूं लोगां रौ मोहभंग हुवण लाग्यौ, च्यारूंमेर असंतोस, आक्रोस अर अनास्था री भावनावां उपजी। म्हैं सोचूं, बगत री आ संवेदना समकालीन नुंवी कविता री सगळी भासावां में आपरा पग पसारण लागी। मूल्य अर परंपरावां री लीक सूं हट नै अेक नुंवी संवेदना कवितावां में आवण लागी। पारसजी रौ सोच अर वांरी कवितावां ई जमीन सूं घणी जुड़्योड़ी ही। म्हनै आज भी वांरी अेक कविता 'उतरतौ पगोथियौ' जकी तेजसिंह जोधा री दुमाही पत्रिका 'दीठ' में छपी, याद है। स्थितियां सारू खुद-ब-खुद सवाल उठ्या कविता अेक नुंवौ पसवाड़ौ फेर्यौ।

'राजस्थानी—अेक' रा पांच कवियां में पारसजी म्हारै घणा नजीक हा। वांरी कविता में नुंवी संवेदना अर बदळतै मिनख री मूल्यहीन जिंदगी रा केई-केई चित्राम हा। पारस अरोड़ा री कवितावां रौ सोच अर चिंतन रौ दायरौ 'राजस्थानी—अेक' संकलन रै कवियां सूं साव अलायदौ

हौ। वै गंभीर अर स्थितियां नै गैराई सूं समझ'र कविता लिखता तौ आपरी बातचीत में भी वांरी आ गंभीरता छैड़ै नीं हटी। म्हारौ सन् 70 रै पछै तेजसिंह जोधा सूं करीबी जुड़ाव हुवण रै कारण जोधपुर जावणौ हुयौ। वै 40, पिरथीपुरा में आपरै निजू मकान में रैवता। औ म्हारौ बठै ठैरण रौ डेरण हौ। दिनभर तेजजी रै साथै जोधपुर में घूमणौ अर पछै सिंझ्या रा सांतरी चरचावां हुवती। पारसजी कवि हुवण रै साथै-साथै दूजी भासावां रा लेखन सूं भी चोखा परिचित हा। पढणौ अर चिंतन करणौ, आ वांरी मूळ प्रवृत्ति ही। वै नुंवै बोध सूं जुड़्योड़ा हा अर उण बगत री पत्र-पत्रिकावां बराबर पढता रैवता।

छुट्टी वाळै दिन पारसजी आपरी साइकिल लेयनै पिरथीपुरा पूगता। हमउमर रचनाकारां सूं गठजोड़ राखणौ अर आपरी अपणायत सूं हंसी-मजाक अर केई भांत री चरचावां करणौ पारसजी री खास आदत ही। दोफारां री गपसप करण रै पछै म्हे लोग सोजती गेट आवता अर बठै रचनाकारां री तलास करता। घणा जणा इयां ई साहित्यिक चरचावां सारू भेळा होवता। औ अेक मिलण-जुलण रौ सांतरौ ठायौ हौ।

उण बगत तांई 'राजस्थानी—अेक' छप चुकी ही अर मणि मधुकर री कवितावां नै लेयनै केई तरै री आलोचना ई हुवती। म्हनै ध्यान है—गोवर्धन हेड़ाऊ रै छापै 'ललकार' रै दफ्तर में गोस्ठी हुयी, केई कवि-आलोचक आयोड़ा हा। म्हैं मणि मधुकर री कवितावां माथै अेक टीप लिखित रूप में पढी। म्हारी टीप रै पछै पारस अरोड़ा मणि मधुकर री कवितावां माथै आपरा तटस्थ विचार राख्या। वै मणि री कवितावां नै आपरी दीठ सूं टंटोळी अर पछै तौ चरचा आगै बधती गई—बधती ई गई।

पारसजी रै सुभाव में विनम्रता ही, पण जद किणी मुद्दै माथै बहस होवती तौ वै गैराई सूं विचार करता अर बहस नै मुक्कमल रूप तांई पूगावता। म्हैं केई गोस्ठियां, सम्मेलनां अर विचार-विमर्श में पारसजी रै साथै रैयौ। पण लारला केई बरसां सूं नीं तौ मिळणौ हुयौ अर नीं किणी ढंग रौ संवाद ई। केई पत्रिकावां निकळी अर आज भी निकळै, आ राजस्थानी वास्तै गीरबै री बात है। पत्रिका संवाद रौ जरियौ है तौ समकालीन लेखन री स्थितियां सूं वाकिफ हुवण रौ अेक माध्यम पण है।

पारसजी फेरूं 'अपरंच' जैड़ी सबळी पत्रिका सरू करी। अपरंच रा सगळा अंक सांतरा अर ठावी रचनावां सूं भर्‌योड़ा है। पारसजी री आपरी अेक दीठ ही, सोच ही। वांरै दिमाग में केई योजनावां ही अर वै पूरै जोस-खरोस सूं 'अपरंच' नै फेर नुंवा-पुराणा रचनाकारां सूं जोड़्या। वां सूं घणी उम्मीद जागी पण नियति रौ हेलौ। पारसजी रै सुरगवास बाबत अखबार में पढ्यौ तौ अेकरकौ धक रैयग्यौ।

⌘⌘

● *ओळूं*

पारस अरोड़ा : मायड़ भासा रौ अेक बटाऊ

✍ **हरमन चौहान**

पारस अरोड़ा : अेक हस्ती, अेक समदर-सी। उणरी जिनगाणी मांय कित्ती ई स्थितियां-परिस्थितियां आई अर आंधी-अंधड़ भी आया उणरी जिनगाणी मांय। वौ कदैई नीं घबरायौ। म्हैं उणनै करीब सूं देख्योड़ौ हूं। गांठ में पांच पईसा नीं, पण हौसलौ बुलंदी पर। अैड़ौ हिम्मतवान म्हनै जोधपुर में मिळ्यौ। बठै म्हैं 1964 में जून रा महीना में ग्रेज्यूअेशन करणै सारू पूगियौ। दिसंबर रा महीना में राजस्थान रा लूंठा साहित्यकार स्व. ओंकार पारीकजी अकादमी, उदयपुर सूं पधारया। वै उदयपुर मंगल सक्सेना रै कहणै पर राजस्थान साहित्य अकादमी में सचिव रै पद माथै राजस्थान री सहकारिता विभाग सूं नौकरी छोड'र उदयपुर हिंदी अकादमी जोइन कर लीवी। वांनै ठा ही कै म्हैं जोधपुर आगै भणण सारू गयोड़ौ हूं। वांनै उदयपुर में अेक कवि-सम्मेलन सारू आवणौ हुयौ, जिणमें वै आमंत्रित हा। बठै म्हैं अर पारस अरोड़ा जी भी आमंत्रित हा। औ कवि-सम्मेलन सोजती गेट बारै सांम्ही चौगान में हुयौ।

सम्मेलन खतम हुयां पछै ओंकारजी पारीक म्हारौ परिचै पारसजी अरोड़ा सूं करायौ। उण बगत पारसजी 'जाणकारी' पत्रिका काढ रैया हा। अेक अंक स्वतंत्रता रै इतियास बाबत हौ। आगलौ अंक नवबोध री कवितां रौ विसेसांक हौ। म्हारी कवितावां भी उणमें छपी ही। पारसजी सूं परिचै हुयां पछै म्हैं हर दूजै या तीजै दिन मिलता रैवता हा। साहित्य रै बारै में वै चरचा करता। म्हनै राजस्थानी साहित्य रै बारै में उण बगत इत्तौ ज्ञान नीं हौ। तद वै म्हनै विगतवार बतावता हा। वांरौ ज्ञान देख'र म्हैं हतप्रभ हुवतौ। कीं तौ स्व. ओंकारजी पारीक अर कीं पारसजी अरोड़ा रै माध्यम सूं राजस्थानी साहित्य बाबत लिखणै रौ मौकौ मिळ्यौ। पैली म्हैं फगत हिंदी में इज लिखतौ हौ। पछै तौ जोधपुर रै साहित्यकारां सूं स्व. नेमीचंदजी भावुक रै माध्यम सूं परिचै हुयौ। बठै म्हैं हर बार 'ललकार', 'ज्वाला' अर 'अभयदूत' साप्ताहिक में लिखतौ रैवतौ। इणी बिचाळै पारसजी नै दोय-तीन अंक पछै यानी पाली जावणौ पड़्यौ।

पारसजी मूळ रूप सूं प्रेस कंपोजिटर हा। अठै रमेश उपाध्यायजी भी आंरा अंतरंग मित्र हा। कंपोजिटर रौ जीवण अबखौ हौ। अेक-अेक आखर नै लेय'र कंपोज करणौ, दस-दस, बारह-बारह घंटा काम करणौ पड़तौ। प्राईवेट प्रेसां मांय तौ इयां इज चालतौ हौ। घर मांय तंगहाली। पण हूंस पत्रिका काढण री। वै आपरी पत्रिका हरिप्रसादजी पारीक री प्रेस सूं

छपावता हा। बठै सूं इज लेखकां नै अंक भिजवावता हा। ग्राहक री बात छोडौ, खुंजियै सूं डाक टिकट लगाय'र भेजता हा। म्हारै कनै आवता। चरचा करता अर खूब करता।

उणां री घर-परिवार री हालत देख'र तरस आवतौ। पण मायड़ भासा रौ अगाध प्रेम देख'र म्हैं चुप्पी साध लेवतौ। कणै-कणैई म्हनै खुन्नस भी उठती कै भाईजी, आ अणूती बेगार क्यूं मोल ले लीवी ? वै हंसता थकां कैयौ, ''मायड़ तौ मायड़ इज हुवै। आज मायड़ भासा मांय कोई सावळ ढंग री पत्रिका ई कोनी, जिकै राजस्थानी साहित्य मांय नवबोध साहित्य रचै। घणाई लिखारा नवबोध रा है, पण कुण बूझै ? इणीज सोच सूं म्हैं आ 'जांणकारी' पत्रिका काढी हूं।'' म्हनै 'जांणकारी' रा दोय अंक बताया—अेक स्वतंत्रता पछै रौ इतियास अंक, दूजौ म्हनै हाल याद नीं आय रैयौ है, तीजौ स्यात कविता अंक हौ, जिणमें म्हारी ई रचनावां वै छापी ही।

वांरी प्रेस में म्हैं दोय-तीन दफै गयौ हौ, बठै वै अेक-अेक आखर नै लेय'र ओळी जमावता जावता। वाक्य पूरौ हुवणै रै पछै पेज रा खांचा में जमावता जावता। पेज पूरौ होवण रै पछै दूजी ओळी सरू करता। इयां ई चवदा-चवदा घंटा सुदि काम करता। वां दिनां दो-चार कंपोजिटर हुवता जिका ईमानदारी अर मेहनत सूं काम करता, चायै प्रेस मालिक हुवौ या नीं। कई दफै आपरी गांठ सूं चाय पीवता।

अेकर वै म्हारै कमरै माथै आया—रात रा नौ बज्यां। म्हैं म्हारा रूम-पार्टनर सागै भणतौ हौ। आंख्यां लालचुट ही। वांरी आंख्यां प्रेस में भी म्हैं जोयी तो बठै भी लालचुट लागती। उण दिन कमरै पै वांनै पूछ ई लियौ, ''भाईसा, आपरी आंख्यां इत्ती लालचुट क्यूं रैवै ? कांई प्रेस में काम करतां आंख्यां लाल हुय जावै ?'' पारसजी बोल्या—''नईं रे, साच बात तौ आ है कै कदै-कदैई भांग री गोळी चढा लिया करूं हूं।'' म्हैं पूछ्यौ, ''प्रेस मालिक कीं ई नीं कैवै ?''

''नईं तौ। उणां नै काम सूं मतलब है, वै जाणै भी है।''

म्हनै अचरज हुयौ। वै आगै खुलासौ करयौ कै अेक दाड़ै मालिक रै कहणै सूं भांग री गोळी चढा'र कोनी गयौ तौ सात-आठ घंटा पछै म्हारै में आळस अर सुस्ती आवण लागी। उण दिन प्रेस मालिक नै कोई काम म्हारै सूं जरूरी करावणौ हौ, क्यूंकै वौ काम म्हारै सिवाय कोई दूजौ कर ई नीं सकतौ हौ। रात रा दो बज्यां काम निपटाय'र घरै गयौ। आगलै दाड़ै प्रेस गयौ तौ मालिक घणा राजी हा। म्हारा मोर थेपड़िया अर पछै भांग री गोळी लेवण री छूट देय दीवी।

पारसजी हमेस नुंवी सोचता। वांनै उण बगत रूसी, फ्रांसिस अर अंग्रेजी साहित्यकारां रौ घणौ अध्ययन हौ। म्हारा कमरा पै आवता जद घंटां चरचा चलती। म्हैं मून होय'र वांरै ज्ञान रै प्रति मन मांय नतमस्तक हुवतौ। जिद्दी इत्ता हा कै आपरी बात आगलौ जद तांई नईं मानतौ तद सुदि बहस चालती। वै ज्ञान रा भंडार हा। राजस्थानी, हिंदी, उर्दू, गुजराती, मराठी, बृजभासा साहित्य रौ पूगतौ ज्ञान हौ। म्हनै अचरज हुवतौ कै इत्तौ म्हनै ज्ञान ई नईं, पण पारसजी सूं म्हैं घणी सीख लीवी। जोधपुर रा सगळा साहित्यकारां सूं वांरौ गैरौ संबंध हौ। स्हैर में कठैई साहित्य-समारोह हुवतौ बठै वै हाजर रैवता। हिंदी रा मानीता साहित्यकार रमेशजी उपाध्याय वांरै सागै कीं टैम सुदि कंपोजिटर रैयोड़ा हा। नेमिचंदजी भावुक, गोवर्धन हेड़ाऊ, सिंघवीजी, डॉ. शक्तिदानजी कविया, रेवतदानजी, बिज्जी दा, डॉ. नारायणसिंह भाटी, ओंकारजी पारीक, नंद भारद्वाज आद अर राजस्थानी भासा रा तत्कालीन साहित्यकार पारसजी री प्रतिभा रा कायल हा।

पारसजी हमेस नवबोध रै सिरजण में विस्वास राखता हा। वै केई भासावां रा कवियां री कवितावां रौ उल्थौ करयौ, खास कर 'र अंगरेजी रा कवियां री कवितावां रौ। नवबोध री पत्रिका 'जांणकारी' काढी। दो-तीन अंक संयुक्त संपादन में म्हैं काढिया, जद वै पत्रिका रौ जिम्मौ म्हनै सूंपनै पाली कोई प्रेस में चल्या गया हा। राजस्थानी भासा री मान्यता सारू कई दफै गोस्ठियां में प्रबल विचार रखता। अेक-दो बार 'पोस्टकार्ड अभियान' ईचलायौ। कई आलेख मान्यता सारू लिख्या। पदम मेहता री माणक पत्रिका में भी काम करयौ। पछै वै जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय री प्रेस में नुंवी जिम्मेदारी संभाळ लीवी। म्हैं 1969 में अेम.अे. करयां पछै जोधपुर छोड दियौ। दिल्ली में अेक साल रैयौ, पछै म्हैं बम्बई चल्यौ गयौ हौ। दोनां रै बिचाळै पत्राचार हुवतौ रैवतौ। सन् 1971 सूं 1979 सुदि बम्बई में इज हौ। 1973 में म्हैं दूरदर्शन केंद्र रै हिंदी समाचार विभाग में अनुवादक पद माथै, पछै मार्च 1980 मांय हिंदुस्तान जिंक री शाखा जिंक स्मैल्टर, विशाखापत्तनम में हिंदी अधिकारी रै रूप में चल्यौ गयौ, इण बीचै भी पारसजी सूं म्हारौ पत्राचार हुवतौ रैवतौ। वै पछै 'दीठ' पत्रिका काढी। पछै 'अपरंच' काढवा लाग्या। अंक म्हनै मिलता ई हा। म्हारी रचनावां ई उणमें छपती रैयी।

पारसजी रौ उपन्यास 'खुलती गांठां' घणौ चावौ हुयौ। पैलौ कविता-संग्रै 'झळ' छप्यौ, पछै 'जुड़ाव' अर 'काळजै में कलम लाग आग री' कविता-संग्रै छप्या। वांरौ उपन्यास 'खुलती गांठां' पछै अै सगळा कविता-संग्रै आपरी खुद री जिनगाणी में जिकी अबखायां आयी अर वांनै हंसता थकां झेली, वै साख भरै कै पारसजी कित्ता जिंदादिल माणस हा। घर में धणियाणी या टाबरटोळी नै भणक ई नीं लागती। आ बात म्हैं नजदीक सूं देखी हूं। वै गरीबी देखी अर भुगती, पण कोई सूं अेक रुपियौ भी उधार नीं लेवता हा। आपरा सिद्धांत रा पक्का धणी हा। मित्रता में कोई छळ-कपट नीं। साची बात कैवण में हिचकता कोनी—कोई नाराज व्हौ तौ भलांई हुवौ। खरी कैवणी, अंतस सूं सुखी। गाढी मित्रता में म्हारै अलावा भी घणाई हेताळू मित्र हा। रमेशजी उपाध्याय, डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, तेजसिंह जोधा, नंद भारद्वाज, राजेन्द्र बोहरा आद घणाई मित्र हा। राजस्थानी हेताळुवां सूं पत्राचार करता रैवता। म्हारी राइटिंग तो 'लिखै मूसा, पढै खुदा' पण वांरी राइटिंग इत्ती सुंदर, साफ-सुथरी अर भासा तौ मनमोवणी हुवती ई ही। मां अर मायड़भासा, संस्कृति अर साहित्य सूं इत्तौ जुड़ाव हौ कै बस पत्रिका काढणी इज है। जीविया जद सुदि औ लगाव रैयौ इज है। 'अपरंच' रौ काम वांरा लाडेसर गौतम अरोड़ा नै सूंपग्या, आ कित्ती लूंठी बात है। कांई वांनै पैलां इज औ सूझग्यौ हौ?

अैड़ी लूंठी शख्सियत नै कुण भुलाय सकै? राजस्थानी भासा मांय वांरौ योगदान हमेस घणौ महताऊ रैवैला। म्हारी वांनै अंतस हिरदै सूं श्रद्धांजळी।

⌘⌘

17/3690, अम्बे कॉलोनी
हवामगरी चौरायौ, सेक्टर-14
गोवर्धन विलास, उदयपुर (राज.) 313001
मो. 9509159514

● *ओळूं*

डॉ. नीरज दइया

(ख्यातनाम कवि-संपादक पारस अरोड़ा रौ कवि-आलोचक डॉ. नीरज दइया सूं घणो गैरो अर आत्मिक संबंध रैयौ। इण रौ अेक मोटौ कारण पारसजी अर सांवरजी रौ लांबौ लेखकीय जुड़ाव ई मान सकां। इण सूं ई बेसी अेक रचनाकार रूप खुद नीरज दइया ई वां सूं जुड़ाव रखता रैया। संस्मरण पेटै डायरी रौ प्रयोग कीं निजू प्रसंगां नै लेय'र ओळूं रा कीं चितराम राजस्थानी में साव नवौ मान सकां। -**संपादक**)

बस अेक हौ पारस जिसौ पारस, बाकी बेसी खीला है....

31 अक्टूबर, 2015

म्हैं खासी ताळ पछै मोबाइल देख्यौ जद ठाह लागी दिनूगै-दिनूगै पारस जी रै नीं रैवण रौ अेस.अेम.अेस. आयोड़ौ हौ। पतियारौ नीं हुयौ— इयां कियां हुय सकै? काल ई तौ बात हुई ही। बातचीत मांय 'अपरंच' रै नवै अंक नै लेय'र खासा उमाया हा। म्हैं गौतम नै तुरत फोन करयौ। ठाह लागी—बात तौ साची है। दिनूगै चार बजी अटेक आयौ अर गौतम रात ई रवाना हुय'र जयपुर आयौ, अबै पाछौ जोधपुर जावण लाग रैयौ हौ। साथियां नै समाचार मिल जावै आ सोच'र म्हां तै करयौ कै फेसबुक माथै सूचना करी जावै। म्हनै स्कूल जावण री खथावळ ही पण फेर ई पोस्ट लिखी अर पारस जी रौ फोटू लगायो :

चाव-ठावा कवि-संपादक श्री पारस अरोड़ा नै आज चार बजी हार्ट-अटेक आयौ अर वै सौ बरस ले लिया। जोधपुर में राजस्थानी रा बडेरा पारस जी री दिनूगै 11 बजी छेहली-जातरा निकळैला। डब-डब नैणां माइत सरीखा पारसजी री ओळूं नै घणै मान निवण करूं।

सिंझ्या विचार करयौ कै पारसजी गया परा। पारसजी तौ पारस हा, जिणां रै सबदां नै म्हैं हियै उतार निहाल हुयौ। वै घणी घरबिद बातां करया करता। साची बस अेक हौ पारस जिसौ पारस, बाकी बेसी खीला है। केई मिनख तौ फगत मन रै तीणा करै अर खीला खुबै जियां खुबता रैवै। अठै किणी रौ नांव लिख्यां नाराजगी हुय जासी।

खीला जित्तै खावणा है, खावणा पड़सी। आज मन रै मोटौ खीलौ लाग्यौ कै पारसजी नीं रैया। औ मोटौ खाडौ कदैई नीं भरीजैला।

29 अक्टूबर, 2015

—प्रणाम करूं।

—हां नीरज! जियां कै थारै सूं बात हुई, आपां अपरंच में वासु री कवितावां लेय रैया हां। यार म्हारै खन्नै उण रै सरगवास री तारीख कोनी। थन्नै जाणकारी हुवै तौ बता।

—हां सा है। म्हैं गौतम नै ई-मेल माथै भेज देसूं....।

—ठीक। याद राखजै।

●●

—सांवर !

—म्हैं बोल रैयौ हूं नीरज।

—अरे हां, गळती सूं थारै नांव री जागा थारै बाप रौ नाम लेय लियौ। देख इयां है कै म्हैं सांवर री कवितावां छांट रैयौ हौ तौ अेक कविता आ थन्नै सुणावणी चावूं।

—किसी है, सुणावौ।

अेक कविता सुणा'र पारसजी कैवण लाग्या, देख कविता में सवाल है—म्हारै साथै कुण? रे नीरज, सांवर रै साथै म्हैं हूं, थूं है अर आपां सगळां हां। कवि कदैई अेकलौ कोनी हुवै। उण भेळै आखौ जगत हुवै। अच्छिया जावण दै, और बता कांई कर रैयौ है?

—कांई नीं.... बस बैठो हौ अर आपरौ फोन आयग्यौ। आ कैवतां ई बां फोट काट दियौ।

20 अक्टूबर, 2015

—नीरज!

—हां सा, प्रणाम करूं।

—खुस रै बेटा। म्हैं थन्नै इयां कैवतौ कै लीलटांस बांची? कहाणी अंक।

—हां सा.... केई कहाणियां बांची। अच्छौ अंक है।

—सतीश छीम्पा री कहाणी बांची।

—कोनी बांची सा.... बतावौ, कांई हुयौ?

—आ वा कहाणी है जिकी म्हैं पाछी भेज दी ही अर औ संपादक छाप दी।

—संपादक संपादक री दीठ न्यारी-न्यारी हुवै सा। उणनै ठीक लागी हुवैला।

—बात ठीक बिना ठीक री कोनी। म्हारौ थारै सूं औ सवाल है कै इसी कहाणियां कांई राजस्थानी में आवणी चाइजै?

—म्हारौ मानणौ है कै कहाणी रै विगसाव खातर केई प्रयोग करीज्या करै अर सतीश कीं न्यारै ढंग सूं कहाणियां लिखी है।

—छोड, आ बात अठैई छोड। पैली वा कहाणी बांच अर पछै आपां बात करसा। ओके। राखूं।

—ठीक, म्हैं कहाणी बांच'र आप सूं बात करूंला।

14 अक्टूबर, 2015

आज पारसजी रौ फोन आयौ। कोई तारीफ करणी पारस जी सूं सीखै। 'पाछौ कुण आसी' संग्रै री कवितावां पेटै बात करता-करता कैवण लाग्या—नीरज, थारी केई कवितावां तौ इसी है कै म्हनै लागै म्हैं लिखी है अर म्हैं साची कैय रैयो हूं—वाकैई भोत बढिया संग्रै आयो है।

पारसजी कैयौ कै संग्रै री पांच प्रतियां खरीदणी चावूं। म्हैं कैयौ कै म्हैं भेज देसूं। बोल्या—इयां नीं हुय सकै। थूं किताब म्हनै समरपित कर दी है। बस। म्हैं तुरत दाव चलायौ कै ना री हां हुयगी। म्हैं कैयौ—फेर इयां क्यूं कैवौ कै थूं म्हारौ बेटौ है। वै चुप हुयग्या अर हंकरग्या—तौ ठीक म्हैं बताऊंला, थूं भेज दियै।

12 अक्टूबर, 2015

—नीरज। थारी किताब बांच रैयौ हूं। आनंद आय रैयौ है। थूं म्हनै आ किताब समरपित करी है। इण रै लारै थारी कांई भावना रैयी है?

—भावना नीं, आ भगती है सा। पैली बात तौ आप म्हारै जीसा सांवर दइया रा करीबी रैया। दूजी बात कै वां पछै जिकी-जिकी बातां आप कैयी, दूजै किणी नीं कैयी। तीजी बात कै आपरी कविता-जातरा नै म्हैं राजस्थानी रै सीगै घणी महताऊ मानूं। चौथी बात कीं कैवतौ कै बिचाळै पारस जी बोलग्या—वा-वा रैवण दे। थारै सूं म्हैं जीत कोनी सकूं।

—हार जीत री कांई बात हुयग्यी?

—चल छोड, जावण दै। म्हैं फोन राखूं।

29 अगस्त, 2015

पारसजी असपताळ में भरती है। वांरै तकलीफ बेसी है।

जे कठैई कोई भगवान है अर वै आपरै हाथ सुख-दुख सांभ राख्या है तौ म्हैं उण सूं अरज करूं कै पारसजी नै निरोग राखै। कम सूं कम वांरौ नवौ कविता-संग्रै आवै जित्तै तौ निरोग राखै कै वै संग्रै त्यार कर सकै। घणै हरख री बात कै भाई गौतम बेगौ ई कविता-संग्रै सांम्ही लावण री हामळ भरी है।

9 फरवरी, 2015

ढोला-मारू होटल में 'अपरंच' रै बीकानेर अंक लोकार्पण रौ सांतरौ आयोजन हुयौ। पारसजी नीं आय सक्या, गौतम आयग्यौ हौ। अखबारां में कवरेज ई सांतरौ रैयो। किणी पण पत्रिका रै अंक री अर संपादक री अेक सींव हुया करै। बीकानेर रा केई रचनाकारां री रचनावां नीं छपण रौ मलाल ई रैयौ, पण न्हाया जित्तौ ई पुन्न। हरीश बी. शर्मा रौ पूरौ नाटक छपणौ राजस्थानी पत्रिकावां रै आं दिनां रै दौर मांय साव नवी बात रूप जाणीजैला।

10 अगस्त, 2014

आज पारसजी रौ जलमदिन है। म्हैं बधाई देय'र वां सूं इजाजत लेय'र अेक सवाल करयौ कै आपरौ नवौ कविता-संग्रै छपग्यौ या छपैला?

वांरै सुर मांय अचरज हौ—क्यूं कांई हुयौ ? कांई बात करै है ? म्हारौ कविता-संग्रै छपैला अर थन्नै ठाह नीं पड़ैला, आ कदैई हुय सकै है कांई ?

म्हैं कैयो—आपरौ लारलै प्रकाशनां री विगत बतावै कै 2014 में आपरौ नवौ कविता-संग्रै आवैला।

वै बेसी अचरज सूं बोल्या—कीकर ? तद म्हैं खुलासौ करयौ कै सुणौ, आपरा तीन काव्य-संगै छपियोड़ा है अर तीनूं ई दस-दस बरस रै आंतरै सूं। 'झळ'(1974), 'जुड़ाव' (1984) अर 'काळजै में कलम लागी आग री' (1994) तो अबै आ बताओ कै बरस 2014 में आवणियै कविता-संग्रै रौ नांव कांई है ?

बै ठीमर सुर में बोल्या—आवैला, आवैला। गौतम अर म्हैं प्लानिंग कर रैया हां। थूं तौ जाणै, म्हैं कवितावां कम लिखूं पण अबै संग्रै जित्ती हुयगी है। थेंक्यू थन्नै। जीवतौ रैव। अच्छिया म्हैं फोन राखूं। फेर बात करालां।

17 मार्च, 2014

होळी रै मौकै गौतम फेसबुक माथै पारसजी री जोड़ैसर फोटू लगाई है। कवि पारसजी री कवितावां सूं म्हैं घणौ प्रभावित रैयौ हूं। म्हैं पारसजी पेटै लिखी टीप री आं ओळ्यां नै पाछी लिखूं—पारस अरोड़ा अेक सिमरध कवि रै रूप में ओळखीजै। आपरी कविता अेक न्यारी काव्य भासा अर मुहावरौ हासिल कर चुकी है अर भासा में संप्रेषण अर निजू काव्यात्मक सुर रै पाण आप आपरी पुखता कवि-ओळख राखता थकां राजस्थानी पाठकां सांम्ही सांवठौ भरोसौ दरसायौ है। (लिखी बात नै पाछी लिखणी मतलब कै दूसर उतारणौ अबखौ लागै। सो अठै इत्ती सूं ई काम चलावौ, बाकी री जे किणी रै जीव में आवै तौ पोथी 'आलोचना रै आंगणै' रै आलेख आधुनिक कविता रा साठ बरस में बांच लेवै।)

8 दिसम्बर, 2013

गौतम री फेसबुक सूं ठाह पड़ै कै आज पारसजी रै ब्यांव री 55वीं बरसगांठ है। म्हैं बधाई दी तौ पारसजी सवाल करयौ कै थन्नै कियां ठाह लागी ? म्हैं जद गौतम अर फेसबुक री बात कैयी, तौ बोल्या—आजकाल थां लोगां री दुनियां घणी नजीक-नजीक हुयगी है। अठै री बात बठै अर बठै री बात अठै। गजब दुनिया हुयगी है। म्हनै हरख है कै थे भाई-भाई प्रेम राखौ। देख, थूं मोटौ भाई है अर गौतम छोटौ, उणरौ ध्यान राखजै। आं दिनां वौ ई लिखा-पढी कर रैयौ है। अपरंच उण रै भरोसै ई है। आं थां सगळा री है अर इण नै थां सगळा नै ई देखणी है। ठीक अबै राखूं। थे नवा लोग कैया करौ जियां कैवूं—गुड नाइट।

2 अगस्त, 2012 (राखी)

पारसजी सदा फोन उठावतां ई 'नीरज!' बोलै अर म्हैं 'हां सा प्रणाम करूं, नीरज बोल रैयो हूं' कैय'र बात करूं। वै सवाल करै—थारै पाखती म्हारी कोई किताब है ?

—किसी किताब ?

—म्हारी कोई किताब ले अर उणरै लारै देख.... म्हनै आ बता कै अबार तुरत कोई किताब म्हारी देख सकै।

म्हैं हां कैय 'र पारसजी री पोथ्यां मांय सूं अेक हाथ में लेय 'र देखूं। म्हनै हरख हुवै कै आज राखी है अर पारसजी रौ जलमदिन है।

वै डांटण रै लहजै में कैवै—हां म्हारौ परिचै बांच। म्हैं कैवूं—बांच लियो। वै भळै पूछै—कांई बांच्यौ। तद म्हैं मुळकतौ कैवूं—लिख्योड़ौ है हैपी बर्थ-डे। वै भोळावण रै सुर में कैवै—भला आदमियां ! थे जलमदिन माथै तौ फोन कर लिया करौ। देख नीरज, इयां है कै आपां नै राजस्थानी रै सगळै लेखकां-कवियां रै जलम अर निरवाण री तारीखां लिख 'र राखणी चाइजै। जे आपां ई आं बाबत बात नीं करांला तौ कुण करैला ? बस बात खतम। म्हैं राखूं।

⌘⌘

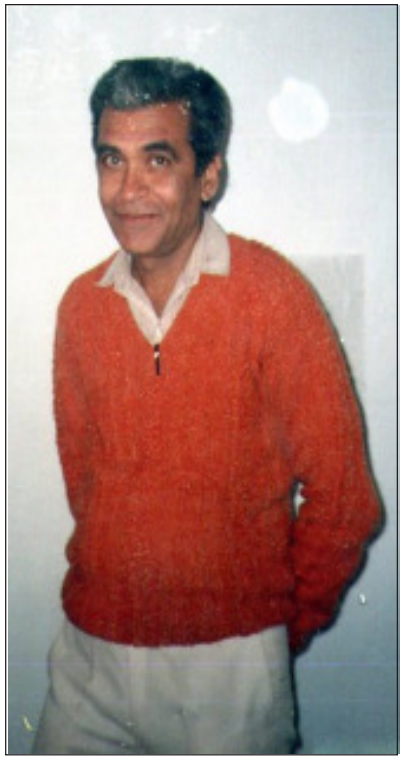

पारस जी तौ पारस हा

✍प्रो. भंवरसिंह सामौर

पारसजी रै निधन रौ समाचार मिल्यौ तौ वांरै जीवण री रीलां आंख्यां सांम्ही चालगी। पारसजी फगत राजस्थानी वास्तै जिया। राजस्थानी भासा अर साहित्य नै नुंवी ओळखाण दीन्ही। म्हनै याद है—'राजस्थानी-अेक' रौ अक्टूबर-दिसंबर रौ बानगी अंक। इण अंक राजस्थानी कविता नै अेक नुंवी पिछाण दिराई अर आ पिछाण नुंवी कविता रै तालकै ही। इण अंक रा संपादक हा—तेजसिंह जोधा। इण अंक रा कवियां मांय गोरधनसिंह शेखावत, पारस अरोड़ा, ओंकार पारीक, मणि मधुकर अर तेजसिंह जोधा हा। अनुभूति अर अभिव्यक्ति रै बीचली छेती नै पिछाणण वाळा कवि हा—पारसजी।

जीवण रा जतन करता मिनख रै उणियारां माथै उणियारां री पड़त कांदै रै छूंतकां री याद करावै। आं उणियारां नै अेक-अेक कर प्रगट करण मांय पारसजी उस्ताद हा। रचना करम करता थकां पारसजी घरां व्हैता थकां भी घर मांय नीं लखावता। चाय पीणी भी भूल जावता। रचना-करम करियां पछै वै आपरी रचनावां रा मालिक नीं रैय फगत बांचणियां या आलोचना करणिया व्हैता। वांरी रचना-प्रक्रिया ओरां सूं अळगी ही। वांरी रचना छपियां पछै भी बदळाव सारू त्यार रैवती।

पारसजी रौ रचना-करम अनुभूति सूं अभिव्यक्ति लग पसर्‍योड़ौ जात्रा-पड़ाव-सो लखावै। वांरौ रचना-करम अेक जात्रा समान हौ। जात्रा कद पूरी व्हैती, इणरौ कोई तय समै नीं हौ। वै थिर विद्रोह रा कवि हा। वांरी मुळक कैयां नै बेचैन कर देती। वै जाणकारी, दीठ अर माणक रै संपादन सूं भी जुड़्योड़ा रैया। खुद रौ छापौ 'अपरंच' भी काढ्यौ। बीच में बंद हुय फेरूं सरू हुयग्यौ जकौ आज लग छपै। वै कविता, गद्य, संपादन अर अनुवाद मांय उमर गाळ दी। कबूतरां रै चौक सूं सरस्वती नगर री जात्रा रौ म्हैं साक्षी रैयौ हूं। वांरै हाथ रा लिख्या दोय कागद मोतियां ज्यूं सज्योड़ी ओळ्यां रा आज ई म्हैं अंवेर नै राख्योड़ा है। वांरी मनमोवणी लिखावट ज्यूं ई वै सोवणा लेखक हा। वांनै निंवण, निंवण, निंवण।

⌘⌘

134, गाँधी कॉलोनी, चूरू (राज.)

● *संस्मरण*

विचार-वैविध्य नै स्वीकारण री खमता ही पारसजी में

✍**जानकीनारायण श्रीमाली**

आज शिवराज जी छंगाणी सूं पारस जी रै सुरगवास रौ पतौ लागौ। राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, बीकानेर रै सचिव नातै घणी बार पारस जी सूं संवाद हुयौ। मिलणौ-भेटणौ भी हुया करतौ। पारस जी जड़ां सूं जुड़्योड़ा साहित्य साधक हा। वांरौ मोवणौ भासा सिल्प वांरै सिरजण री खासियत हौ।

म्हनै अजै ई याद है, अकादमी री अेक पोथी रौ संपादन करता थकां वां पोथी मांय राम-जन्मभूमि विवाद रौ उल्लेख कर दियौ। वां दिनां औ गरमा-गरम राजनीतिक मुद्दौ हौ। म्हैं अध्यक्ष वेद व्यास जी नै इण बाबत बात करी, पण वै कोई ध्यान नीं दियौ। आखिरकार पोथी रौ प्रकासन रुकग्यौ। इयांलकी महताऊ पोथी री इण अबखायी नै मिटावण सारू जोधपुर प्रवास मांय म्हैं खुद पारस जी सूं अनुरोध करग्यौ। म्हारौ मत हौ कै बाबरी ढांचै रै ध्वंस सूं उठ्योड़ै धूड़ रै गुबार मांय सामाजिक सरोकारां अर साच नै जोवणौ भावी इतिहासकारां री चुनौती है। आपश्री रै संपादन मांय आवण वाळी पोथी सूं जे औ अंस हटै तो पोथी रै भासा, सिल्प अर कथ आद किणी पख माथै कोई प्रभाव नीं पड़ै।

आपरै विचारां माथै हमेस अडिग रहता थकां भी वैचारिक वैविध्य नै स्वीकारण री जबरी खिमता पारस जी मांय ही। पारस जी मौन स्वीकृति दीवी। सेवट पोथी छपी। वांरी आ उदारता अर बडप्पन म्हारै हिवड़ै में नूंवी दीठ अर उत्साह रौ सिरजण करग्यौ।

पारस जी अेक गजब रै सम्मोहक व्यक्तित्व रा धणी हा। मायड़ भासा रौ औ लाडेसर आपरै रचाव रै पेटै हमेस आपां रै बिचाळै अमर रैवैला। म्हारौ निवण।

⌘⌘

ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर (राजस्थान)

● *चितार*

यादां रै ओळावै पारस जी

✍ रामसिंह राठौड़ डांवरा

पारस जी सूं म्हारी जाण-पिछाण लगैटगै चाळीस बरस पुराणी ही। वां दिनां जोधपुर रो घणो विस्तार नीं हो अर जोधपुर री सगळी साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियां सोजती गेट अर उणरै ओळै-दोळै सिमट्योड़ी ही। सिंझ्या वेळा म्हैं पारस जी, जनगण रा संपादक नारायण सिंह जी पीथल, विज्ञान मोदी (समाजवादी चिंतक), युवजन रा संपादक गौतम भंडारी वगैरा रोजीना मिलता रैवता अर म्हांरी बैठक कॉफी हाउस रै सांमी आयोड़ै जूनै यूनिवर्सिटी हॉस्टल (अबार पुलिस कंट्रोल रूम) री भींत माथै रैवती, जिणमें वां दिना रा राजनीतिक, साहित्यिक विसय अर राजस्थानी भासा रै हालात माथै अकसर चरचा व्हैती। पारस जी जनवादी विचारधारा सूं जुड़िया होवण सूं वांरी समाजवादी विचारधरा रा विज्ञान जी सूं गरमागरम बहसां चालती। राजस्थानी भासा अर लेखन नै लेय 'र नारायणसिंह जी पीथल अर पारस जी विचार करता रैवता अर नुंवै लेखन सूं अेक-दूजै नै वाकब करावता। उणी दिनां तेजसिंह जोधा री पोथी 'ओळ्यूं री ओळ्यां' आई ही, जकी नुंवी राजस्थानी कविता में आपरो खास मुकाम बणायौ अर घणी चरचा में ही।

पारस जी रौ माणक सूं जुड़ाव अर राजस्थानी में लेखन नुंवी पांत रा राजस्थानी लेखकां नै घणौ प्रभावित करयौ अर वै अैड़ा लेखकां नै आगै लावण में सदीव आगीवांण रैया। म्हैं राजस्थानी व्याकरण अर लिखण रौ आंटौ पारस जी सूं ई सीख्यौ। वै म्हारी अेक-दो कवितावां राजस्थानी में जलतेदीप दैनिक में छापी अर म्हारौ होसलौ बधायौ। पारस जी रै उपन्यास 'खुलती गांठां' री पांडुलिपि म्हैं देखी अर इणनै जल्दी छपावण री ताकीद करी। पारस जी तेजसिंह जी री रसूल हमजातोव लिखित कीं दागिस्तानी कवितावां रौ अनुवाद देख्यौ जद कैयो, तेज जी, थांरौ जस बधसी।

उण बगत रा ठावा लेखक रेवतदानजी चारण, पत्रकार गोरधन हेड़ाऊ इत्याद सोजती गेट रै सांमी पान री दूकान माथै ऊभा रैवता हा, वां सूं ई पारस जी री अकसर मुलाकात व्हैती। कदैई बिज्जी ई बोरूंदा सूं आवता जद उठै ऊभा रैवता अर पारस जी सूं रामा-स्यामा व्है जावता।

उणी दिनां आज रा चावा राजस्थानी कवि आईदानसिंह जी भाटी गांव सूं जोधपुर पढण नै आया हा अर आपरै लेखन री सरुआत करी ही। वांरी म्हासूं अर पारस जी सूं मुलाकात नेमिचंद्र जैन भावुक रै गांधी अध्ययन केंद्र में हुई ही। आईजी री कविता री धार अर लिखण रो होसलौ देख पारस जी कैयो, ''आईदान, थूं लिखतो रैईजै, थूं घणौ आगै जावैला। बाद में आ मुलाकात हमेसां रा गाढा संबंधां में बदळगी अर पारस जी नैं आईजी रै राजस्थानी लेखन माथै घणौ गुमेज हो।

सरकारी नौकरी लागणै सूं नारायण सिंह जी पीथल बारै गया परा अर वांरी ठौड़ पारस जी अर भावुक जी माणक चौपड़ा जी नै कैयनै म्हनै वांरी ठौड़ जनगण रै संपादक पद माथै लगायौ। पण पारस जी खुद प्रिंटिंग प्रेसां में सोसण सूं लड़ता-आथड़ता नौकरी करता रैया। वै पान खावण रा घणा सौकीन हा अर केई वेळा सोजती गेट बावड़ता तद म्हैं पूछता कै आज मूड कीं फीको लागै, तो वै पान थूकता कैवता, ''जची कोनी, बाणियौ पईसां रौ देवाळ कोनी, म्हैं वौ प्रेस छोड दियौ।'' म्हांनै धक्कौ लागतौ। घर में बूढा मा'सा है, भाभीजी है, टाबर-टोळी है, गिरस्ती कीकर चालसी, पण बेफिक्री सूं रोज दांई बातां करता। दूजै दिन फेर नुंवै प्रेस री तलास में! थोड़ी आगै गाडी गुड़कती, फेरूं बोई बोल, ''जची कोनी, म्हैं वौ प्रेस ई छोड दियो।'' पछै पाछा नुंवै रुजगार री जुगत में। म्हे सगळा चिंता करां, पण पारस जी रै उणियारै माथै सळ ई नीं। वै दिन पारस जी रै जीयाजूण सूं संघर्ष रा दिन हा। वै आपरै हाल में रैवता, पण दुख तो मा'सा, भाभीजी अर टाबर झेलता। दुख नैं पीवणौ अर अंगैई चैरै माथै नीं लावणो पारस जी रौ सुभाव बणग्यौ हो। सेवट यूनिवर्सिटी प्रेस में नौकरी लागण सूं कीं सुख रा दिन आया अर पारस जी री पोथ्यां रै प्रकासण सूं लेय'र गिरस्ती जमावण रौ कीं ले-ढब बण्यौ।

आज पारस जी इण दुनिया में नीं है, पण वांरौ लेखन रै प्रति उमाव, ग्यान री उत्कंठा अर राजस्थानी साहित्य नै वांरौ योगदान सदीव याद रैवैला। 'जाणकारी', 'राजस्थानी-अेक' सूं लेय'र अपरंच तांई राजस्थानी रै बधापै री वांरी जातरा अर 'जुड़ाव', 'झळ' नै 'काळजै में कलम लागी आग री' जैड़ी अनुपम कृतियां वांरै लेखन री ऊंचाइयां री साख भरै। संघर्स रा वै दिन अर वांरौ प्रेम अर दूजां रै हित तांई दीयै रै पतंगै दांई तिल-तिल जळ नै दूजां नै प्रकास देवणौ वांरी अमरता रा अैनाण बण'र राजस्थानी लेखकां नै प्रेरणा देसी अर वांरी ओळूं में झुरता म्हां जिसड़ा साथियां नै साचो मारग बतासी। इण कामना रै सागै वांरी यादां रै ओळावै वांनै याद करता थकां विनम्र श्रद्धांजळी अर वांरै पंथ नै उजासतौ लाडेसर गौतम वांरी कांण अर विरासत नै आगै लेजा रैयौ है, उणरी आफळ अर हौसलै नै घणा रंग।

⌘⌘

●संपादन

'अंवेर'

पारस जी अरोड़ा रै संपादन में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर सूं प्रकाशित आधुनिक राजस्थानी कविता संकलन

●*कविता-कूंत*

'अंवेर' रै संपादकीय सूं

✍**पारस अरोड़ा**

इणी बिचाळै राजस्थानी री पत्र-पत्रिकावां में कीं युवा कवि नवी कविता री अेक सुथरी समझ साथै सांमी आवण लागा हा। दूजी पासी हिन्दी अर दूजी भारतीय भासावां री कविता केई पड़ाव पार कर चुकी ही अर आपरै बगत री अबखायां नै अंगेजण रै साथौसाथ ई संवेदनाऊ स्तर माथै अंतस री अनुभूतियां अर उळझावां नै दरसावण लागी ही। भासा के प्रदेस री सींवां विचारां अर भावां नै नीं रोक सकै अर औ इज कारण हौ के कीं युवा राजस्थानी कवि मंच अर लोकप्रियता रै मोह नै छोड'र नवै भावबोध साथै झीणै संवेदनाऊ लखाव नै पूरी संजीदगी सूं कविता में उकेरण लागा हा। सन् 1971 में इणी ढाळै रै पांच कवियां नै लेय'र संपादक कवि तेजसिंह जोधा 'राजस्थानी अेक' नांव री पत्रिका काढी। इणमें जोधा री 'हल्लौ बोल' रौ भाव लियोड़ी भूमिका रै साथै ई आं पांचू कवियां—गोरधनसिंह सेखावत, पारस अरोड़ा, ओंकार पारीक, मणि मधुकर अर तेजसिंह जोधा री कवितावां टीप समेत दियोड़ी ही। राजस्थानी साहित्य अर समाज में इण री भूमिका नै लेय'र खासौ हाकौ हुयौ, इण सूं केई तरेड़ा चवड़ी

व्हेगी, कैयां रा खलेपड़ा उकलगा अर केई कुआं रौ पाणी नापीजगौ। बगत निकळ्यां पछै कीं नवा लिखारां नै ई उण भूमिका रै उण तेवर माथै अेतराज पैदा हुयौ—पण उण बाबत अठै म्हैं 'हेमाणी' अंक में बरतीज्योड़ा तेजसिंह जोधा रा आं सबदां साथै कै 'वौ, वैड़ौ रुख ई आपां रै दीठाव री इतियासू जरूत हौ।' कैवूंला के उण बगत बापरयोड़ी थिरता के अेकरसता नै तोड़ण सारू अर अेक सैंजोर सरुआत सारू राजस्थानी कविता माथै कसियोड़ै अेक सिकंजै नै तोड़ण सारू उण बगत उणी गत रै सुर री जरूत ही। सन् 1965 रै अैड़ै-छैड़ै लिखणौ सरू करणिया आं कवियां सारू समाजू हालात खासा बदळ्योड़ा हा, औ बदळाव वांरी कविता में उतरणौ सुभाविक हौ।

नवी पीढी रा आं पांच नांवां रै अलावा ई उण बगत रै आखती-पाखती केई दूजा प्रबल संभावना लियोड़ा नांव जुड़ग्या, जिकां में नंदकिशोर बोड़ा, हरीश भादाणी, सत्येन जोसी, पुरुषोत्तम छंगाणी, नंद भारद्वाज, सांवर दइया, मोहन आलोक, प्रेमजी प्रेम, चन्द्रप्रकास देव ल आद हा।

देस रा हालात तेजी सूं बदळ रैया हा। चीन अर पाकिस्तान सूं लड़ीज्योड़ी जंग, दिनौदिन बधतै मूंघीवाड़ै रै कारण आम आदमी सारू रोटी अर मूंडै बिच्चै बधतौ आंतरौ, बेरोजगारी अर भ्रस्टाचार रै कारण मिनखीचारै रौ बिखरतौ सरूप अर टूटता समाजू मान-मोल, पड़पत हालातां रै नीं व्हेतै निवारण सूं उपजतौ असंतोख—इण तमाम दीठाव नै लेय बणती रचनाकार दीठ—कोई सोवणा-मोवणा चितराम के रंगरळी रा भाव तौ उपजावण सूं रैयी। उणरै रचनाऊ ढाळै तौ आई बगत री दियोड़ी बळत ऊतरी।

सै'र सूं लेय'र गांव लग बदळाव री हवा झपाटा मारती। आदमी रौ संबंध आपरै घर-परिवार रै प्रति इज नीं, खुद रै प्रति ई बदळगौ। सम्बन्ध में तरेड़ां आयगी। फैसण रौ खिंचाव अर आरथिक हालातां री टूट आदमी नै मांय सूं तोड़ण लागी। जात-पांत, ऊंच-नीच, धरम-करम, देस-प्रदेस अर भासा आद रै नांव माथै आदमी इत्तौ बंट-फंटग्यौ कै धींरै-धींरै अेक पूरी सबदावळी अरथविहूणी-सी हुवती लखावै। औ इज वौ भाव अर दीठाव है, जिकौ संवेदनाऊ स्तर माथै रचनाकार नै मांवौमांय मथै अर उणरै रचनाऊ ढाळै रूप लेवै।

अठै म्हैं म्हारै संगी-साथी अर युवा पीढ़ी रै निजू व्यवहार में नीं उतरणी चावूं के कुण कित्तौ ईमानदार, कुण कीकर ईमानदार, चोखा-भूंडा हरेक पीढी में लाधै। नीं ई आ दरसावणी चावूं के कुण किण लाभ सारू किणनै गोडा दिया। आ ठौड़ उणी झौड़ नै दरसावण री कोनी। इणी साथै आ बात ई खुलासा करण जोग है के नवी पीढी रा कवियां में कीं अैड़ा हा अर है, जिकां नै अै पड़तळ हालात मांय सूं तोड़्या इज नीं, निचोड़ दिया है अर वांरै रचनाऊ ढाळै निरासा, बिखराव, चुप, हांफ अर स्खलन रा भाव खास तौर सूं उतरया है। दूजी पासी कीं कवियां आं पड़तल हालातां सूं खुद में जूंझ री नवी सगती उपजाई है, बडेरां री अबखायां अर मजबूरी नै समझ'र वांरी जूंझ नै मान दियौ है अर आवती पीढी में बिस्वास दरसायौ है।

आईदानसिंह भाटी, श्याम महर्षि, अर्जुनदेव चारण, मीठेश निरमोही, भंवर भादाणी, ज्योतिपुंज, आत्माराम, चन्द्रशेखर अरोड़ा, बी.आर. प्रजापति, राजेन्द्र बोहरा, जुगल परिहार,

सत्यदेव चूरा आद अेक पूरौ जूथ है, जिकौ बिस्वास रै दायरै नै विस्तार देवै, नवै रै निरमांण री खिमता राखै अर अबखायां सूं जूंझण रौ हौंसलौ दरसावै। नवी पीढी माथै भासा-साहित्य नै लेय'र दूजी ई केई जिम्मेवारियां है, जिकां नै बगतसर निभावणी जरूरी है। कविता रै मान-मोल अर इतिहासू ठौड़ां रा ई केई निरणै व्हेणा अजै बाकी है, जिका अबै नवी पीढी रै नांव इज चढैला।

अठै म्हैं अेक बात रौ औरूं खुलासौ करणी चावूं के कविता छंद रै बंधेज अर गेयतत्त्वां रै प्रति म्हारै मन में कोई विरोध भाव नीं है। इण संकलन में म्हैं छंदविहूणी नवी कविता री ओळख नै इज अंवेरण रौ काम कियौ। निस्चै ई आ मान'र चालूं के गीत ढाळै छंदां बंधी कविता री लूंठी परंपरा रैयी है अर नवां रचनाकारां में ई केई इण ढाळै सामरथवान कवि मौजूद है, जिकां माथै न्यारौ कांम व्हेणौ चाहीजै, जिण सूं के उण ढाळै री अेक सुपखी अर सबळी ओळखाण बण सकै। जे इण संकलन में कोई इण ढाळै री रचना जुड़ी तौ किणी न किणी रूप वा संपादक री मजबूरी के जरूत रैयी व्हेला। जे राजस्थानी री नवी कविता रै कथ अर ढाळै नै लेय'र बात करां, तौ म्हनै अठै आ केवण में कीं संकौ नीं के कथ रूप नवी कविता जित्ती सबळ है, ढाळै नै लेय'र केई कवियां सूं मैणत री उम्मीद की जा सकै। नवी छंद-विहूणी कविता नै ई अेक अंतस-लय री जरूत व्है अर कवि नैं आपरै कथ रै अनुकूल भासा अर मुहावरौ बरतणौ पड़ै। इणी दीठ सूं नवै कवियां नै खासी सावचेती बरतणी पड़ैला। कथ अर ढाळै मांय सूं किणी अेक नै खास मानण सूं बात नीं बणै। दोनूं अेक दूजै रा पूरक है। अेक रै कमजोर हुयां, दूजौ पख कमजोर पड़ै। निजू तौर सूं आ ई कैवणी चावूंला के कविता खुद रै संतोख सारू नीं, वाचक रौ ई पूरौ ध्यान राखणौ पड़ैला के वा किणरै सारू है, उणरौ वाचक कुण?

इण सारू ई माथौ निंवै के अजै कीं जरूरी निरणै ई भासा री अेकरूपता नै लेय'र अेकठ रूप में नीं लिरीज्या। इण कारण अैड़ै किणी संकलन रै संपादन री बगत के किणी पत्रिका रौ संपादन करतां संपादक री बत्योड़ी सावचेती अर निरणै रचनाकारां साथै अणूताई लखावै। आ निबळाई इण पोथी ई बरतीजी, जिण सारू माथौ निवावणौ जरूरी है।

⌘⌘

● *बेतारीख डायरी रा पाना*

मैणती लोगां बिच्चै म्हैं

✍ **पारस अरोड़ा**

वातावरण, आदत अर रुचि रै अनुसार इज आदमी आपरौ विकास करै। जद आपरै चौफेर मैणती लोगां रौ जमावड़ौ व्है अर बगत रै साथै आप निरंतर आं लोगां बिचै आपरौ दायरौ फैलावता रैवौ तद आपौआप आपरी निजर, आपरी, मनसा, रुचि रै अनुरूप आपरै जुड़ाव नै बधापै।

टाबरपणै सूं इज म्हनै भइसा अर बाई रै जरियै मैणत रा जिका संस्कार मिळिया, वां सूं म्हारी रुचि अर आदत संवरी। बगत री सूंप्योड़ी जिम्मेवारियां निभावतां नित रौ मजूरां रौ साथ म्हनै लगौलग मैणत रा माणिंगरां सूं जोड़तौ रैयौ। चवदै-पंदरै बरसां री उमर सूं लेय'र पचास बरसां नैड़ै पूग्यां आज ई मजूरां साथै काम करूं। आं लारला पैंतीस बरसां में इत्ता मैणती लोगां सूं जुड़ियौ के जिकां री मैणत रा दिवला कदैई म्हारै अंतस में निरासा रौ अंधारौ नीं व्हेण दियौ।

बीड़ियां बांध'र धणी रौ इलाजकरावती, टाबरां री भणाई री पूरी चिंता राखती मराठण शिवबाई मैणत री अैड़ी जोरदार गंगा बैवाई के सेवट जिणमें धणी री बीमारी धुपगी। भैरजी कछवाहा (माळी) री लुगाई ओखां बाई दिनूंगै गुदळकियै उठ'र लोगां रै पाणी-पीसणै में लागती जिकी पौर रात गयां थमती। म्हैं इणनै 'धा' कैय'र बतळावतौ। बाई अर धा जद मिल'र पापड़ बटती के घट्टी पीसती तद उण बटणै-पीसणै री आवाज सूं संगीत उपजतौ। घट्टी पीसतां दोनूं जणियां परभाती के सिंझ्यारौ गावती उण बगत अंतस में इमरत-सो बरसतौ। आज ओखां बाई रा चारूं बेटा आपरै आपै-धापै सोरा-सुखी।

नौकर सूं मालिक, मालिक सूं नौकर अर पाछा मालिक बणतां भाई साहब हरिप्रसादजी पारीक जिंदगानी रा केई खोटा-खरा दिनां सूं सामेळौ कियौ। आपरी मैणत अर समझ रै पांण इज नगर रै छपाई रै स्तर में ऊंचायां थरपी। वै म्हनै अेक चोखौ कम्पोजिटर बणणै में तौ मदद करी'र, साथौसाथ साहित्य रै प्रति म्हारी रुचि बणाणै अर संवारणै में ई मददगार रैया। विजयदानजी देथा, नारायणसिंघजी भाटी, मरुधरजी मृदुल, सत्यप्रकाश जी जोसी, रेवतदानजी आद रचनाकारां रै बिच्चै हरिप्रसादजी अेक मात्र सांचा पाठक अर खरा समीक्षक रैया। केई जगचावी पोथ्यां म्हैं सरुपोत में आप सूं लैय'र ई बांची।

म्हनै प्रेस रौ काम सिखावणिया गुरु पं. चिरंजीलालजी व्यास आज ई म्हारै साथै विश्वविद्यालय प्रेस में सुपरवाइजर है। म्हैं आंनै 'पंडितजी' अथवा 'गुरु' कैय'र बतळावूं।

राजस्थान लॉ वीकली प्रेस में जद म्हैं आं कनै काम सीख्यौ, तद आंरै कम्पोज री स्पीड देख'र ई नसौ चढतौ। म्हारै सूं चार-छे बरस बडा व्हेला, हाई स्कूल री परीक्षा म्हां साथै इज पास करी, दोनां रै ब्यांव में ई बरस-भर रौ फरक, इणी कारण संबंधां में मैत्री-भाव ई रैयौ। मजूरां रै प्रति पंडितजी हमेस सहयोग री भावना राखै। पइसौ कीकर बचायौ जा सकै, कांई उणरौ सदुपयोग व्है, काम री 'क्वालिटी' अर 'क्वांटिटी', दोनां में समन्वय कीकर राखीजै, इणरौ प्रमाण रैया है 'पंडितजी'।

जोधपुर रा प्रेसां में उस्ताद मांगीलालजी नै कुण नीं जांणै। मजूरां रै हक-हकूकां सारू उस्ताद आखी उमर लड़ता रैया। खरा मजूर, पक्का लीडर अर सांचा इनसान मांगीलालजी बरसां प्रेस मजूर यूनियन रा आधार रैया। कॉ. एच.के. व्यास, अशरफ फौज़दार, विजय मेहता, तात साहब आद मजदूर नेतावां बिच्चै रैय'र उस्ताद ई कामरेड रै रूप में ओळखीजता। घीसूखां जी, गोविंदजी, मम्मद भाई आद रै साथै मिळ'र उस्ताद प्रेस मजूरां रै संगठन अर संघर्ष नै प्रांत व्यापी सरूप दियौ। आज उस्ताद मजूरां बिच्चै नीं रैया, पण वांरै काम अर मैणत री ओळूं मजूरां रै अंतस में आज ई कायम है।

दूबळै-पतळै सरीर माथै भरवां मूंछां, चोळौ-पजामौ पैरयां, हाथ में बेग लियां अेक युवक आपरै साप्ताहिक अखबार सारू आखै नगर में बतूळियौ व्है ज्यूं चकारा काटतौ। बगत रा अेक लारै अेक थपेड़ा झेलतौ अर अखबार री नियमितता कायम राखण सारू निरंतर खपतौ औ युवक, मन सूं नीं तन सूं तूट्यौ। अेक दिन गणपतजी खंडेलवाल बतायौ के माणक मेहता सख्त बीमार है। दूजै दिन चैरै माथै सफेदी अर पीड़ा लियां माणकजी गणेश प्रेस आयगा। ''पारसजी, डाक्टर पूरै आराम री सलाह दिवी है। म्हैं महीनै-भर हिल नीं सकूंला। 'जलतेदीप' थांनै अर गणपतजी नै चालू राखणौ है।'' इणी जलतेदीप सारू जूंझतां-जूंझता माणकजी भारी बीमारी पाळ ली, पण अखबार नै नगर रौ प्रमुख दैनिक बणाय दियौ।

इणी गत वल्लभदासजी, ताराचंदजी, प्रेमसिंघ, नारायणसिंघ, श्याम, काळू, ईश्वर, जतनी, भंवरी आद कित्ता ई अैड़ा नांव जिकां री मैणत देख'र अंतस उजासै। अै वै लोग हा जिका भुजबळ रै आसरै समदर पार करण रौ निरणै कियौ अर पार कियौ। अै वै लोग जिकां री खिमता देख'र दूजां रा ई हौसला बंधै। अैड़ा अर इत्ता लोगां रै नैड़ौ रैय'र म्हैं कच्चौ अर कोरौ कीकर रैवतौ। म्हारी मैणत अर लगन देख'र आं लोगां रै चैरै ई विस्वास, हेत अर लाड री मुळक पसरी।

⌘⌘

राजस्थानी रै बारै में

राजस्थानी में लिखण रै कारण कीं लोगां री म्हारै प्रति, तो कीं लोगां री राजस्थानी रै प्रति पीड़क विचार ई सांमी आया। म्हारा कीं मित्र राजस्थानी में बरतीजती आपाधापी अर रापटरोळियै नै देख'र कैयौ के म्हैं हिंदी में लिखूं। कीं बगत बीत्यां वांरा विचार बदळ्या अर वै कैयौ के म्हैं म्हारी बात मायड़ भासा में इज सहज-सफळ रूप सूं कैय सकूं अर म्हारी कवितावां

बांच'र वै म्हनै बधाई दिवी। वांरी बधाई म्हारै सारू किणी पुरस्कार सूं कम नीं ही। इणी गत अेक हिंदी री स्थानीय साहित्य संस्था रा संचालक ई आपरा विचार दरसाया :

''हिन्दी ने राजस्थानी को पचा लिया है। आप लोग व्यर्थ में राजस्थानी का हल्ला मचा रहे हैं। आने वाले दस-पंद्रह वर्षों में राजस्थानी को मान्यता दिलाने का आंदोलन समाप्त प्राय: हो जाएगा। हमारी संस्था ने राजस्थानी के साहित्यकारों को मंच देने का अथवा राजस्थानी साहित्य के प्रकाशन में सहयोग का जो कार्य किया है, उसे आप राजस्थानी वालों को हमारे द्वारा दिया गया एक अनुदान ही समझिये।''

आं सबदां नै सुण'र मन में खारास वापरगी ही। धरती माथै, अठै रा इज जाया-जलम्या अेक साहित्यसेवी रै मूंडै सूं निकळ्योड़ी आ बात कठै तांई सही ही, आ तो वै ईज बताय सकै। अेक बात जरूर ही के इण तरै रा हिंदी रै नांव माथै आपरी दुकानदारी जमायोड़ा लोगां नै राजस्थानी री मान्यता खुद रौ धंधौ मंदौ पड़णै रौ डर अेक प्रमुख कारण हौ।

आज राजस्थानी री दुकानां लागगी, आ न्यारी बात है। राजस्थानी आज कीं लोगां री रोटी-रुजगार रौ साधन, तौ कीं लोगां री नेतागिरी रौ, तो इणसूं वां हिंदी रा दुकानदारां री बात सही नीं मानीजै। पैली बिच्चै आज राजस्थानी रौ भविष्य वत्तौ उजळ है, राजस्थानी साहित्य वत्तौ सबळ है।

अठै म्हनै गुजराती पत्रिका 'अखंड संवाद' रै अेक अंक में करसनदास मणिक री अेक वात 'पाकोरंग' री कीं बात ई याद आवै :

''राजस्थानी भासा री मिठास इण नारी रै मूंडै सुण्यां पछै, राजस्थान ई हिंदी रौ विरोध किण कारण सूं करतौ व्हैला, बरोबर समझ में आ जावै! भारत री मान्य भासावां में राजस्थानी नै स्थान देवण सूं इनकार करणियां रा कान कित्ता अविकसित है, इण बात रौ खयाल साथैसाथ आय जावै।'' औ है अेक गुजराती रै लेखक रौ विचार।

इणी गत गुजराती रा प्रख्यात कवि अर 'संस्कृति' रा संपादक श्री उमाशंकर जोशी आपरी पत्रिका रै दिसंबर 1971 रै तीन सौवैं सैलंग अंक नै 'कविता विशेषांक' रै रूप में निकाळ्यौ। इण अंक में अठारै विदेसी अर चवदै भारतीय भासावां री कवितावां ही अर प्रत्येक भासा रै काव्य साहित्य माथै टीप दियोड़ी ही। इण अंक रै 'प्राक्कथन' में श्री जोशी अेक ठौड़ लिख्यौ :

''भारतना बंधारणे मान्य करेली चौदह भाषाओं उपरांत पण भारतना मोटा समुदायो जेनो उपयोग करे छे अेवी साहित्य अकादेमी जेवी संस्थाअे मान्य करेली केटलीक भाषाओ मैथिली, राजस्थानी, डोगरी वेगेरे तमाममांथी काव्यकृतिओ लई सकाई नथी, अे ऊणप छे, खास करीने पडोशनी राजस्थानी मांथी काव्यकृतिओ रजू थई शकी नथी अे खटके छे।''

गुजराती रै इण प्रख्यात कवि री आ पीड़ा इण अंक में राजस्थानी कविता रै नीं व्हेणै री म्हांणी पीड़ा नै कठैई हळकी जरूर करै। वांरी अबखाई कांई रैयी व्हेला, वै इज जाणै।

⌘⌘

किसको कहे कोई अपना यहाँ...

✍ **रमेश उपाध्याय**

अजमेर में पहली बार रहते समय ही मुझे एक और मित्र मिला, जिससे पारिवारिक स्तर वाली स्थायी मित्रता हुई। वह था जोधपुर का पारस अरोड़ा, जो राजस्थानी भाषा का प्रतिष्ठित साहित्यकार है और राजस्थानी में 'अपरंच' पत्रिका निकालता है। एक और प्रेस में बेहतर नौकरी मिलने पर मैंने केशव आर्ट प्रिंटर्स छोड़ दी थी। उस प्रेस में काम करते समय एक दिन मैंने देखा एक कंपोजीटर अपना काम करते-करते गाना गा रहा है—साथी न कोई मंजिल है, दिया है न कोई महफिल, चला मुझे लेके ऐ दिल, अकेला कहाँ...

वह हिंदी साहित्य में 'मोहभंग' का समय था। अकेलेपन, अजनबीपन और कुण्ठा संत्रास का समय। सार्त्र, कामू, काफ्का का समय। अकविता, अकहानी, साठोत्तरी कहानी का समय। भूखी पीढ़ी, विद्रोही पीढ़ी, नाराज नौजवानों की पीढ़ी का समय , 'बंद गलियों' और 'खोयी हुई दिशाओं' का समय। तो फिल्मों के लिए गीत लिखने वाले कवि-शायर इस साहित्यिक वातावरण से अप्रभावित थोड़े ही रहे होंगे। वे अपने गीतों में अकेलापन, अजनबीपन ला रहे थे—गलियाँ हैं अपने देश की भी हैं जैसे अजनबी, किसको कहे कोई अपना यहाँ...

प्रेस में काम करने वाले हम दो अजनबी, जिनमें से एक अपना काम करते इस गाने को गा रहा था और दूसरा अपना काम करते हुए इस गाने को सुन रहा था, उस क्षण क्या जानते थे कि यह हमारी जिंदगी भर की दोस्ती की शुरुआत है। मैंने पारस के गाने की प्रशंसा की, अपना परिचय दिया और उसका परिचय लिया। जब हमने हाथ मिलाए, तो मानो हमने एक-दूसरे से कहे बिना ही कह दिया हो कि हम एक-दूसरे को अपना कहें।

पारस मुझसे एक-दो साल बड़ा था और विवाहित था। वह जोधपुर में अपनी माँ और पत्नी को छोड़कर अजमेर में काम करने क्यों आया था, मुझे अब याद नहीं लेकिन वह जोधपुर के प्रेसों की बड़ी प्रशंसा करता था। मुझे विस्मय होता—वहाँ इतने अच्छे प्रेस थे, तो यह अजमेर क्यों आया? जोधपुर के साधना प्रेस की प्रशंसा वह बहुत करता था। प्रेस-मालिक हरिप्रसाद पारीक की, उनके बड़े बेटे मोहन पारीक से अपनी दोस्ती की, उस प्रेस से हिंदी और राजस्थानी में छपने वाले प्रगतिशील साहित्य की। उसकी बातें सुन-सुनकर मेरा जी चाहने लगा कि मैं भी कभी वहाँ जाकर काम करूँ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जो पुस्तक मैंने पढ़ रखी है और मुझे पसंद है वही पारस को भी है, जैसे मक्सिम गोर्की का उपन्यास—'मां'।

(लेखक री हिंदी पोथी 'मेरा मुझे में कुछ नहीं' रै पाना सं. 26 सूं)